

## पात्र-परिचय

### पुरुष—

- |                     |                                                   |
|---------------------|---------------------------------------------------|
| १—सूत्रधार          | नाटक-निर्देशक ।                                   |
| २—कृष्ण             | द्वारकाधीश, भगवान् ।                              |
| ३—बलभद्र            | कृष्णक जेठ भाय ।                                  |
| ४—प्रद्युम्न        | कृष्णक पुत्र ।                                    |
| ५—नारद              | देवर्षि ।                                         |
| ६—गरुड              | पक्षिराज ।                                        |
| ७—अनिहद             | कृष्णक पौत्र, प्रद्युम्नक पुत्र, उषाक पति, नायक । |
| ८—चार               | कृष्णक गुप्तचर ।                                  |
| ९—चार               | चित्रलेखाक दूत ।                                  |
| १०—बाण              | बाणासुर, दैत्यराज, उषाक पिता ।                    |
| ११—कुम्भाण्ड        | बाणासुरक मन्त्री ।                                |
| १२—दौवारिक (द्वारी) | बाणासुरक द्वारपाल ।                               |
| १३—ज्वर             | रोगराज, बाणक सहायक ।                              |

### स्त्री—

- |             |                               |
|-------------|-------------------------------|
| १—तटी       | सूत्रधारक पत्नी ।             |
| २—उषा       | बाणासुरक पुत्री, नायिका ।     |
| ३—रमा       | उषाक सखी, कुम्भाण्डक पुत्री । |
| ४—चित्रलेखा | उषाक सखी, गन्धर्वकन्या ।      |
| ५—दुर्गा    | देवी भगवती दुर्गा ।           |
| ६—हन्मिणी   | कृष्णक पटरानी ।               |

## उषाहरी-राम

अङ्क

१. उषाहरी-राम	१. उषाहरी-१
२. उषाहरी-राम	२. उषाहरी-२
३. उषाहरी-राम	३. उषाहरी-३
४. उषाहरी-राम	४. उषाहरी-४
५. उषाहरी-राम	५. उषाहरी-५
६. उषाहरी-राम	६. उषाहरी-६
७. उषाहरी-राम	७. उषाहरी-७
८. उषाहरी-राम	८. उषाहरी-८
९. उषाहरी-राम	९. उषाहरी-९
१०. उषाहरी-राम	१०. उषाहरी-१०
११. उषाहरी-राम	११. उषाहरी-११
१२. उषाहरी-राम	१२. उषाहरी-१२
१३. उषाहरी-राम	१३. उषाहरी-१३
१४. उषाहरी-राम	१४. उषाहरी-१४
१५. उषाहरी-राम	१५. उषाहरी-१५
१६. उषाहरी-राम	१६. उषाहरी-१६
१७. उषाहरी-राम	१७. उषाहरी-१७
१८. उषाहरी-राम	१८. उषाहरी-१८
१९. उषाहरी-राम	१९. उषाहरी-१९
२०. उषाहरी-राम	२०. उषाहरी-२०

— मित्र

१. उषाहरी-राम	१. उषाहरी-१
२. उषाहरी-राम	२. उषाहरी-२
३. उषाहरी-राम	३. उषाहरी-३
४. उषाहरी-राम	४. उषाहरी-४
५. उषाहरी-राम	५. उषाहरी-५
६. उषाहरी-राम	६. उषाहरी-६
७. उषाहरी-राम	७. उषाहरी-७
८. उषाहरी-राम	८. उषाहरी-८
९. उषाहरी-राम	९. उषाहरी-९
१०. उषाहरी-राम	१०. उषाहरी-१०

म० म० हर्षनाथ झा विरचितम्

## उषाहरणनाटकम्

[नान्दी - गीति]

राग इमन [गीत सं० - १]

जय जय कुमतिविनाशिनि देवि,  
सभ अभिमत पुर तुअ पदसेवि ।  
तनुचि निन्दित कुन्दक भास,  
आसनरुचि शशिविम्ब उदास ।  
आसन घवल कमल शशि भाल,  
श्वेत वसन लस, नयन विशाल ।  
वीणावण्ड कलश घर हाथ  
अपमाला वर पुस्तक साथ ।  
हर्षनाथकवि मनस्य भान,  
भगवति करिय अभय वरदान ॥

उषाहरण नाटकक व्याख्या

[ गीत सं०—१ ]

कुमति-विनाशिनी = अथलाह बुद्धिके नष्ट करनिहारि । अभिमत = अभिलषित । तनुचि = देहक कांति सँ कुन्द फूलक छविके निन्दित करनिहारि (श्वेतवर्णा) । आसनरुचि = सुहृद छवि सँ चम्पूमाक मण्डल उदास होइत अछि । घवल = उज्जर । शशि भाल = कपार पर चन्द्रमा । श्वेतवसन = उज्जर वस्त्र । लस = शोभित होइछ ॥



(गीतार्थे इत्येकः)

या सुवलाभुसहासना सुतयना पूर्णन्दुषिम्बानना  
कुन्देन्दुज्वलविग्रहा निज, रंसविभ्रती पुस्तकम् ।  
वीणामक्षगुणं सुधाद्यकलक्षम्बुहादिदेवाचिता  
सर्वाभीष्टफलप्रदा वितरतु श्रेयांसि सा शारदा ॥१॥

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । आदिष्टोऽस्मि खण्डवलाकुलरत्नाकरसुधाकरेण  
कविपण्डितकुलहृदयसरसीरुहभङ्गायमाणन सकलराजकुलमुकुट-  
रत्नायमानचरणकमलेन मिथिलामहीमहेन्द्रेण महाराज श्री  
लक्ष्मीश्वरसिंहदेवदेवेन यथाऽऽमत्सभापण्डितेन कविपण्डितकुल-  
तिलकायमानेन सकराहीकुलवन्दनेन श्रीहर्षनाथशर्मणा विर-  
चितमभिनवमुपाहरणन्ताम नाटकमभिनीयतामिति । तद् एहि-

(गीतक अर्थ मे दलोक)

जे उज्जर कमलक आसनवाली सुन्दर आँखवाली, पूर्णचन्द्र सन  
मुँहवाली कुन्द ओ चन्द्रमा गन उज्जर चमकैत देहवाली, अपना हाथ-  
सभक द्वारा पुस्तक, वीणा, रुद्राक्षमाला ओ अमृत भरल पैल धारण  
करैत, ब्रह्मा आदि देवता सँ पूजित भय सकल अभीष्ट फल देनिहारि  
छविसे श्रीसरस्वती मञ्जुल वितरण करय ॥१॥

[नान्दीक अन्त मे]

सूत्रधार—विशेष कहय उचित नहि । आदेश पओने छी—खण्डवलाकुलरूपी  
समुद्रक चन्द्रमास्वरूप, कविपण्डितसभक हृदयरूपी कमलक हेतु  
भीरास्वरूप, सभ राजालोकनिक मुकुटक रत्न सँ युक्त चरणकमल-  
वला, मिथिलाक राजा महाराज श्रीमान, लक्ष्मीश्वर सिंहदेवदेव  
सँ जे हमर सभापण्डित, कवि ओ ण्डित मे श्रेष्ठ, सकराहीचंश मे  
उत्पन्न श्री हर्षनाथ शर्माक बनाओल नवीन 'उपाहरण' नामक नाटक

णीमाहूय संगीतकमवतारयामि तावत् (सर्व्वतः परिक्रम्य नेप-  
थ्याभिमुखमवलोक्य)—प्रिये ! इहामभ्यस्ताम् ।

(प्रविश्य)

नटी—एतद्दि आणवेहु अज्जउत्तो ।

[एवाऽस्मि आज्ञापयतु आर्य्यपुत्रः ।]

सूत्र०—प्रिये ! पश्य सर्वातस्सुसमुद्धोऽयं वसन्तसमयः । तथाहि—

संफुल्लन्तवमलिकापरिमल श्रीखण्डवलीनिलो  
माद्यरकोकिलकामनीकलकलः कन्दर्पवाणानलः ।  
भङ्गालीकुलकाकली नववधू शोकटाक्षवली  
निशङ्कुभूवि सर्व्वतः प्रसरति प्राप्ते वसन्तोत्सवे ॥२॥

तदेतं वसन्तसमयमधिकृत्य सङ्गीतकमनुतिष्ठतु भवती ।

नटी—जहाणवेदि अज्जउत्तो [यथा आज्ञापयत्यार्य्यपुत्रः ।] (इति गायति) ।

खेलाउ' । तँ परवाली केँ बजाय संगीत प्रारम्भ करैत छी ।  
(चारुभर घूमि नेपथ्य दिस देखि) प्रिये ! एम्हर आबि ।

(प्रवेश कर)

नटी—इयेह छी आज्ञा देल जाओ आर्य्यपुत्र ।

सूत्र०—प्रिये ! देखू, चारुभर ई वसन्त समय भरल पुरल अछि । जेना कि—

फुलाइत नवीन बेली फूलक सुगन्धि, मलयपर्वतक बसात, मत्त  
कोइलीक शब्द, कामवाणक आगि, भ्रमरी सभक गुञ्जन, नववधू  
सभक कटाक्षक पंक्ति—ई सभ वसन्त समय अयला पर पृथ्वी पर  
निविष्ट सर्व्वत्र पसरय लगैछ ॥२॥

तेँ एहि वसन्त समयक विषय लय अहाँ संगीत गाव ।

नटी—जे आज्ञा देबि आर्य्यपुत्र । (गवीत छवि ।)



[राग वसन्त] [गीत सं०-२]

मदननरेश विजय मनकाज,  
 लय परिजन अनुगत ऋतु राज ।  
 शोभित अलितति मरकतमाल,  
 केशर मणिमय—छत्र विशाल ।  
 मासत-कम्पितमाधवि-पुंज,  
 नाचत रसमय भवन—निकुंज ।  
 अलिकुलगुंजित गानविलास,  
 चम्पक किशुक दीपकभास ।  
 कोकिल कलरव नृपतिनिदेश,  
 चलत समीरन दण्ड उदेश ।  
 निरखि सुरत विषटन अपराध,  
 करत कोप तँह मानक बाध ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

अपि च— [गीत सं०-३]

उसरल अगभरि विशिर पसार,  
 बसल सरस ऋतुपति बनिजार ।

[गीत सं०-२]

मदन नरेश = राजा कामदेव । अनुगत ऋतुराज = वसन्तक संग ।  
 अलितति = भीराक समूह । मरकत = मणि विशेष । मासत-कम्पित  
 = हवा सँ झुलाओल । अलिकुल = भीराक समूह । किशुक =  
 पलाश । कलरव = स्वर । नृपति-निदेश = राजाक आज्ञा सँ (कोइ  
 लीक स्वररूपी) । समीरन = हवा । दण्ड उदेश = दण्ड धेवाक हेतु  
 (विरहिणीके) ॥

आओरो— [गीत सं०-३]

उसरल = हटल । पसार = धेववाक पसरल वस्तु । ऋतुपति

पसरल संजीवा मधुरस कूल,  
 अभिनव सौरभ, प्रेम अमूल ।  
 लीलत दक्षिण पवन विचारि,  
 भमि भमि मांगत भनर भिखारि ।  
 पिककुल करत दलालक काज,  
 गाहक तरणी तरणसमाज ।  
 हसित वचन लोचन दय दाम,  
 कितत सिनेह रतन सब ठाम ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

सूत्र०— प्रिये साधु गीतम्

[नेपथ्ये—इदो इदो पिअसहीओ ।] [इत इतः प्रियसखी]

सूत्र०—(आकर्षणं) कथमियं बाणपुत्री उवा कुम्भाण्डदुहिता रामया त्रिनले-  
 खयाऽऽगमरा च समं निमपि मन्त्रयन्त्री इत एवाभिवर्त्तते । तदेहि,  
 आवा मण्यनन्तरकरणीयाय सज्जीभावाव । (इति निष्क्रान्ती) ।

[इति प्रस्तावना ।]

बनिजार = वसन्तरूपी बनिवाई । दक्षिण-पवन = मलयानिल । पिक-  
 कुल = कोइलीसभ । दलाल = सौदा पटओनिहार ॥

सूत्र०— प्रिये ! उत्तम गाओल ।

[नेपथ्य मे — एम्हरहि बाटे 'विसखी' ।]

सूत्र०—(नूनि) को ई बाणासुरक पुत्री उवा, कुम्भाण्डक बेटी रामाक ओ  
 अपसरा बिचलेखाक संग किछु परामर्श करैत एम्हरहि अबैत  
 छथि ? तँ आउ, हमहुँ दुनू मोटए अपिम कार्यक हेतु तैयार होइ ।

(दुहू बहार भेलाह ।)

[इति प्रस्तावना]

[तखन दुहू मखीक संग उवा प्रवेश करैत छथि ।]



(ततः प्रविशति सखीभ्यो सहिता उवाच)

गीत सं०—४ राग कल्याण

तडित-विनिन्दक सुन्दर वेस,

गजपायिनि कामिनि परवेत ।

अलक कलित जानन अभिराम,

अनि घन-वलित विमल हिमधाम ।

अधर ललित, नासा अति धीमा,

कीर दीवल जनु बिम्बक लोभा ।

निरखि मुगल कुच पड्डुन कोति,

चललि रोमावलि मधुकर पाति ।

अविरल नूपुर-किङ्किणि-राव,

मदनविजय जनु सामग गाव ।

रसमय हर्षनाथकवि गाव,

नृप लक्ष्मीश्वरनिह बुभु भाव ॥

राग कान्हड़ा, गीत सं०—५

अपचित हृदय अनङ्ग, चललि रमणि सखिबद्ध ।

मन्द मन्द परवार, अनि आलस कुचमार ।

अलस नयन चित चोर, अनि मद भरल चकोर ।

[गीत सं०—४]

तडित-विनिन्दक = बिजलीकाक निन्दा करयवला स्वरूप । गजपायिनि = हाथी सनक गतिवाली । अलक-कलित = केश सँ घोभित । जानन अभिराम = मुँह सुन्दर लगेछ । घनवलित = मेघ सँ साभित । हिमधाम = चन्द्रमा ॥ कीर = सुग्गा । बिम्ब = तिलकोइक फट्ट ॥ रोमावलि मधुकर = पेटक रोमरेखा हवी भौरा । अविरल = सघन । राव = शव । मदन-विजय = कामदेवक विजय । सामग = सामवेदक गायक ॥

[गीत सं०—५]

अपचित = बड्डल । अनङ्ग = कामदेव । अलस-नयन = अलसायल

बोल बचन हसि मन्द, अमिय बरिस जनु चन्द ।

हर्षनाथ कवि भान मिदिल्लापति रस जान ॥

रामा—सहि बाणपुत्ति ! उक्कण्ठिदाव्व लक्ष्मीअदि भोदी । ता कि कोवि पुरिसो मुत्तम हिअए बट्टदि ।

[सखि बाणपुत्ति ! उक्कण्ठितेव लक्ष्यते नवती, तत्किं कोऽपि पुष्पस्तव हृदये वर्तते ।]

उवा—(सप्रणयकोपम्) किम्पि हिअए मदुअ जहा तहा जणसि । ता इदो दूर ओसर (इति पुष्पमालया साद्वसति) ।

[किमपि दृश्ये कृत्वा पथान्पथा जगति । तदितो दूरमपसर ।]

चित्रलेखा—सहि बाणपुत्ति ! अप्पणो सहीअणे का लज्जा, ता कवेहि सच्च ।

[सखि बाणपुत्ति ! अस्तमनः सखीजनो का लज्जा, तत्कथप सत्यम् ।]

उवा—(मलज्जनघोमुखी संस्कृतमाश्रित्य)—

गौरीशिवजलकीडा यदा दृष्टा मया सखि ! ।

ततः प्रभृति केनापि हेतुना व्याकुलमनः ॥३॥

रामा—कामेनेति भणितव्यं ।

[कामेनेति भणितव्यम् ।]

आखि । अमिअ = अमृत ॥

रामा—सखी बाणपुत्ति ! अहाँ उक्कण्ठित जकाँ लगैत छी, तेँ की कोनो पुरुष अहाँक हृदय मे छथि ?

उवा—(स्नेहयुक्त कोप कय) किछु मन मे राखि अष्ट सष्ट बजैत छह, तेँ एतय सँ दूर भागह । (फूलक मालासँ मारैत छथि) ।

चित्र—सखी बाणपुत्ति ! अपन सखी सँ कोन लाज ? तेँ सत्य कह ।

उवा—(लाज करैत नीचाँ मुहें संस्कृतक आश्रय लयो)—

गौरी ओ शिवक जलविहार जवन हम देखल, हे सखि ! तखन

सँ कोनो कारणेँ हमर मन व्याकुल अछि ॥३॥

रामा—काम सँ से कह ।



उवा—सलज्जमधोमुखी तिष्ठति ।

चित्र०—सखी ! देईए गौरीए प्रसादेन सब सुलभ होइ, ता सामेख प्रसा-  
देइ गच्छहु । (इति सखी देवीगृहपुद्गिश्य गमननाटयन्ति ।)

[सखि ! देव्या गोवर्धः प्रसादेन सर्व सुलभ भवति, तत्सामेख प्रसादविषु गच्छामः ।]

[सोहनी, गीत सं०—६]

सखि सब सङ्ग लव मन अनुमानी,

गिरजा पूजन चललि सेआनी ।

अक्षत चानन सिन्दुर फले,

बेलच नव कय समतूले ।

पुजलनि मन दय भगति बड़ाए,

कयलनि विनती माथ नवाए ।

मँगलनि वर पुनु दुहु कर जोरी,

आधा मोर परिपूरय गौरी ।

हर्षनाथकवि भन मन लाए

सबखन भगवति रहय सहाए ॥

(ततः प्रविशति परितुष्टा गौरी)

उवा—(लाजे नीचामुहे रहैत छथि ।)

चित्र०—सखी ! देवी गौरीक प्रसाद ही सब सुलभ होइछ, ते हुनके प्रसन्न कर-  
बाक हेतु चलैत चल ।

[सब केओ देवीक मन्दिरक हेतु जयबाक अभिनय करैत छथि ।]

[गीत सं०—६]

सेआनी—चतुर नायिका । अनुमानी—विचारि । समतूले—जुटाय ।

[सखन सन्तुष्ट भेलि गौरी प्रवेश करैत छथि ।]

सोहनी, गीत सं०—७

निज जन आरति हरण उदेश,

हिमगिरिनाम्नि देल परवेश ।

जतिक चरण युग दरशन लागी,

हरि हर करथि कतेक तप जागी ।

भगति विवश सेह दरशन देला,

बाणकुमरि अभिमत बुझि लेला ।

कहुलनि माधव शुचिदल पाए,

हरि तिथि सपन मिलत पति आए ।

ई कहि अन्तहित भय गेली,

बाणकुमरि सुनि हरपित भेली ।

हर्षनाथ कवि भन मन लाए,

सबखन भगवति रहय सहाए ॥

( इति निष्क्रान्ता । )

रामा—सहि बाणपुत्ति ! सम्पन्नमनोरहा तुमं देइए प्रसादेन ।

[सखि बाणपुत्ति ! सम्पन्नमनोरहा त्वं देव्याः प्रसादेन ।]

उवा—(सलज्जमधोमुखी तिष्ठति) ।

[गीत सं०—७]

आरति—दुःख । हिमगिरिनाम्नि—पार्वती । हरि-हरि=विष्णु ओ-

महादेव । भगति-विवश=भक्ति ही विवश भय । माधव=वैशाख

मासक । शुचिदल=शुक्लपक्ष । हरि तिथि=एकादशी । अन्तहित=

सुप्त ॥

(गौरी बहार भय गेलीहू ।)

रामा सखी बाणपुत्ति ! पूजमनोरथ भेलहुं अहाँ देवीक कृपा ही ।

उवा—(लाजे नीचामुहे रहैत छथि ।)



चित्र०—सखी बाणपुत्ति ! तुझ तातस्य घरे आनन्ददखणी सुणीअवि, ता अहो-  
वि तहि गच्छहु ।

[सखी बाणपुत्ति ! तव तातस्य गृहे आनन्ददखनिः श्रूयते, तद्वयमपि तत्र  
गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्तास्सर्वाः ।)

इति उषावश्लामो नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

## अथ द्वितीयोऽङ्कः

( ततः प्रविशति बाणासुरः )

( राग परज, गीत सं०—५ )

बाणनृपति अब देल परवेश

कौपथि धरती कच्छा शेव ।

सहस्र बाहु, गिरि सदृश शरीर,

नयन निरखि केओ रहय न थीर ।

मांसपान कर लोचन लाल,

काल सदृश तनु, वदन कराल ।

सकल भूवन जल तृण सम जान,

भुजबल राख अधिक अभिमान ।

चित्र०—सखी बाणपुत्री ! अहाँक पिताक घर मे आनन्दक शब्द सुनि पड़ेछ,  
तेँ हुसरहुलोकनि ओतहि जाइ ।

[सखी बहाच भेलि]

इति उषाक घर लाभ नामक प्रथम अङ्क समाप्त ॥

द्वितीय अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

[ गीत सं०—५ ]

गिरि सदृश = वहाड़क समान । तनु = देह । कराल = डराओन । तृण =

रसमय हर्षनाथकवि गाव,

श्रीलक्ष्मीदेवरसिंह बुझ भाव ॥

बाणः—कः कोऽत्र भोः !

(प्रविश्य)

दौवारिकः—जअहु जअहु देओ ।

[ जयतु जयतु देवः । ]

बाणः—दौवारिक सत्वरं मन्त्रिराज कुम्भाण्डं प्रवेशय ।

दौवारिकः—यथाणवेदि देओ । (इति निष्क्रान्तः) ।

[ यथाज्ञापयति देवः । ]

( राग परज, गीत सं०—६ )

हुत वचन सुनि नृपति निदेश,

शङ्कित मन्त्रिराज परवेश ।

मन मुनि कत-विष करथि विचार

कोन परि सेपख नृप-दरवार ।

निरखि हमर अति सुन्दर रीति

किबहु होएत नृप मानस प्रीति ।

कोदहु हमर जानि किछ दोष,

बाणनृपति मन उपजत रोष ।

अनुछन मन चिन्तित हो आज

परम कठिन नृप सेवन काज ।

सम = खडक समान ॥

बाण के सभ एतय अछि ?

[ प्रवेश कय ]

दौवारिक—देवक जय हो, जय हो ।

बाण—दौवारिक ! भटदय मन्त्रिराज कुम्भाण्डके प्रवेश कराबहु ।

दौवारिक—देवक जे आज्ञा । (बहार भर गेल ।)

[ गीत सं०—६ ]

निदेश = आज्ञा सँ । शङ्कित = शङ्का सँ युक्त । कत-विष = कतेको प्रकारक ॥



हर्षनाथकवि मन दय गाव

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह कुंज भाव ॥

कुम्भाण्डः—जयति जयति महाराजः ।

बाणः—मन्त्रिराज, इहास्यताम (इत्यालिङ्ग्योपवेशयति) ।

कुम्भाण्डः—(उपविश्य) देव, हर्षविशेषो लक्ष्यते, तस्मिन् हरप्रसादेन कोऽपि वरो लब्धः ?

बाणः—अथ किम् ।

कुम्भाण्डः—विशेषेण कथय ।

बाणः—कार्तिकेयदत्तध्वजपतनेन महद्बुद्धिमति ।

कुम्भाण्डः—महाराज, कुसुम्हपुष्टोऽसि, न भद्रं कृतं, तूनमनेन वरेणामुरकुलं क्षयं यास्यति ।

बाणः—(सरोषम्) आः पाप कुम्भाण्ड ! ब्रह्माण्डस्फोटनं वाचा करोषि । नाहं कस्मादपि विभेभिः । शृणु रे संग्रामकातर !

कुम्भाण्डः—महाराज विजयी होय ।

बाणः—मन्त्रिराज ! एतय वैम् । (आलिङ्गनं कय बैसवंत छवि ।)

कुम्भाण्डः—(वैसि) देव ! विशेष आनन्द बुझाइछ को महादेवक प्रसाद से कोनो वर पाओल छछि ?

बाणः—त आओर को ?

कुम्भाण्डः—विशेष रूपे वहु ।

बाणः—कार्तिकेयक देल ध्वजाक क्षयला से महान् युद्ध होयत ।

कुम्भाण्डः—महाराज ! अधलाह कार्य मे पड़ि गेल छी, नीक नहि कयल । निश्चित एहि वरदान से असुरकुलक क्षय होयत ।

बाणः—(तमसाय) आः पाप कुम्भाण्ड ! वचन से हमर ब्रह्माण्ड फोड़ि रहल छह । हम ककरहु से नहि डराइत छी । सुन रे पद से डरयनिहार !—

इन्द्रादपो जम न संतिवाङ्गसङ्गोपना पराः ।

परे के सन्ति भुवने ये योस्त्वन्ति मया सह ॥४॥

कुम्भाण्डः—यथा ववति देव ।

( ततः प्रवर्तति मयूरध्वजः । )

बाणः—(वृष्ट्वा सहर्षं) पश्य पश्य मन्त्रिराज ! पतितो मयूरध्वजः । तन्नूनमचिरेण मम बाहुसहस्रधारणं सफलतामेप्स्यति । तदेहि, गौरीशङ्कराभ्यां पुष्पाञ्जलिदानाय ।

( इति निष्क्रान्तौ )

( इति विश्वकम्भकः । )

( ततः प्रविशति रामाचित्रलेखाभ्यां सहिता पुरुषसङ्गचिह्निता उषा )

उषा—(सवैकल्यम्)—(राग कलिङ्गदा, गीत सं०—१०)

सवन देखल एक नागर धीर,

तन्हि मोर घषित कयल शरीर ।

हमरा डरे इन्द्र आदि देवता अपन देह नुकावय लगैत छथि आ जान के एहि भुवन मे अछि जे हमरा संग युद्ध करत ? ॥४॥

कुम्भाण्डः—जे कहैत छी देव सएह ठीक ।

[तखन मयूरध्वज खसैत अछि ।]

बाण—(देखि सहर्षं) देव, देख, मन्त्रिराज ! खसल मयूरध्वज । ते आव निश्चय हमर हजार बाँहि धारण करव सफल होयत । हाँ आउ, गौरी-शंकर के पुष्पाञ्जलि देवाक हेतु ।

[दुह बहार भेलाह ।]

[इति विश्वकम्भक]

[तखन रामा ओ चित्रलेखाक संग पुरुष-सम्पर्कक चिह्न हाँ युक्त उषा प्रवेश करैत छथि ।]

उषा—(विकलता से)—

[गीतसं०—१०]

नागर धीर = चतुर नायक सम्भीर । घषित = मर्दित । चिकुर = केश ।



फुल्ल बिकुर फुल्ल मोर चीर,  
 अभरण एक रहल नहिं धीर ।  
 आसन भलिन घाम भरि गेल,  
 कोन पुरुष मोहि सज्जम देल ।  
 भल लल मरण होइत बर आज,  
 के की कहत तकर हो लाज ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

(इति शिरसि हस्तप्रिधाय कलङ्कबाधानाटपति ॥)

रामा—(सविश्रम्भम्) सहि ! समस्ससिहि सपस्ससिहि । न खलु कोपि  
 तुज्झ दोसो हुविस्सदि । सुमिरेहि, सुमिरेहि देइए गोरिए वयणं ।  
 (इति सर्वं स्मारयति ।)

[सखि ! समाश्वासिहि समाश्वासिहि । न खलु तव कोपि दोषो भविष्यति ।  
 स्मर स्मर देव्या गौर्या वचनम् ।]

उषा—(मानन्दलज्जं स्मरणमभिनयति)।

रामा—सहि ! लट्ठमणोरहा तुमो । ता कवेहि विसेसेण सविणवृत्त ।

[सखि ! लट्ठमणोरथा रथं, तत्कथय विशेषेण स्वप्नवृत्तम् ।]

उषा—(सलज्जं गीतेन कथयति) —

चीर = वस्त्र । अभरण = गहना ॥

(माथ पर हाथ दय कलङ्क लगवाक बाधाक अभिनय करै छथि ।)

रामा—(आश्चर्य करैत) सखी ! धैर्य धरु । अहाँको दोष नहि  
 होयत । मोन पाड़ु देवी गौरीक वचन । (सभटा स्मरण कर-  
 बैत छथि ।)

उषा—(आनन्द ओ लाज सहित मोन पाड़ुबाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—सखी ! अहाँ मनोरथ केँ तँ पाओल । आव कहू विशेषरूपेँ स्वप्नक  
 वृत्तान्त ।

उषा—(लज्जा सहित गीतक द्वारा कहैत छथि:—)

सोहनी, गीत सं०—११

सखि हे, यतन दय सुनु मोर बानी,  
 करिय उपाय हृदय अनुमानी ।  
 सपन समय एक सुन्दर रूपे,  
 देखल नागर मदन स रूपे ।  
 तमु मुख लाख तनु पुलकित भेला,  
 तन्हि पुनि हसि मोहि कर लेला ।  
 रसमय वचन बोलथि पुनु धीरे,  
 कोन परि रहओ तखन चित धीरे ॥  
 तखनुक अवसर कि कहब तोही,  
 कहइत लाज निवारय मोही ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भाने,  
 नृपलक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

अथ च— (राम मालव, गीत सं०—१२)

सुनु सखि ओ रे, सरस देखल अनि सुपुरुष,  
 तमु मुख, सुमरि सुमरि होअ कत दुख ।  
 तनि विनु ओ रे, जत अछि एहि जगती तल,  
 शीतल, से सभ दुख दय बीतल ।  
 जग भरि ओ रे, घर घर हँसअ सकल जन,  
 मोर मन, तन्हि विनु थिर नहि कउखन ।  
 तन्हि पहु ओ रे, होएत समामम कोनपरि,  
 हरिहरि, करिय उपाय यतन भरि ।

[ गीत सं०—११ ]

यतन = यत्न । नागर = चतुर नायक । मदन-रूपे = कामदेवक स्वरूपे ।  
 कर लेला = हाथ धरलनि । निवारय = रोकैल ।

आओर,

[ गीत सं०—१२ ]

जगतीतल = संसार मे । हरि हरि = हाय हाय । यतन भशि = शक



छनछन ओ रे, मदन-दहन वह मोर तनु,  
सखि सुनु, भाव न जिउब हम तहि बिनु ।  
रसबुझ ओ रे, लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय,  
मनदय, हर्षनाथ भन रसमय ॥

(इति विरहवेदनामभिनयति ।)

रामा—सहि ! समस्ससिहि समस्ससिहि ।

[सखि ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।]

(चित्रलेखाप्रति) सहि चितलेहे ! को उपायो हुबिस्सदि ।

[सखि चित्रलेखे ! क उपायो भविष्यति ।]

चित्र० - कोरियो अविज्जादज्जणसंगमोवाओ ।

[कोदृशोऽविजातजनसङ्गमोपायः ।]

उपा - एवं चित्र मज्जीअणं पि दुल्लहं हुबिस्सदि (इति मूर्च्छति) ।

[एवञ्चैवमज्जीवनमपि दुर्लभं भविष्यति ।]

रामा - समस्ससिहि समस्ससिहि [समाश्वसिहि समाश्वसिहि ।]

(इत्युत्थाप्य नलिनीदलेन वीजयति) ।

चित्र० - (जलं सिञ्चति) ।

भवि । मदन-दहन = कामदेवरूपी अग्नि । वह = जरबैछ । तनु = देह ॥

( विरह-वेदनाक अभिनय करत छथि ।)

रामा—सखि ! धैर्य धरू, धैर्य धरू । (चित्रलेखाक प्रति) सखी चित्रलेखा !  
कोन उपाय होयत ?

चित्र०—अज्ञात व्यक्तिक संगमक उपाय केहन होयत ?

उपा—जै एना होत हमर जीवनो दुर्लभ होयत । (मूर्च्छित होइत छथि ।)

रामा—धैर्य धरू, धैर्य धरू । (उठावके पुरइतिक पात से हो केत छथि ।)

चित्र०—(जल छिटेत छथि ।)

उपा - (संज्ञा लब्ध्वा सदैवलक्ष्यम् ।) -

राग भालव, गीत सं० - १३

पहु बिनु किछु नहि भावय रे, कि करव परकारे ।  
कोन परि होएत समागम रे, सखि करहु बिचारे ॥  
मलय पवन नलिनी-दल रे, चानन घनसारे ।  
परसि अधिक तनु तापय रे, जनि विधुम जंगारे ॥  
सुमरि सुमरि तसु आसन रे, प्रियुष सम बानी ।  
बनुछन रहत विकल मन रे, सखि सुनहु सेआनी ॥  
जओ नहि होयत समागम रे, कि कहव सखि आने ।  
आनि गरल घोरि पीउव रे, हम तेजव पराने ॥  
हर्षनाथ कविशेखर रे, रसमय इहो गावे ।  
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे, मन दय बुझु भावे ॥

(तत्पश्चात्करस्पर्शेन दुःखमनुभूय मूर्च्छति । सखी वीजयतः ।)

पुनः संज्ञा लब्ध्वा गीतेन कथयति) -

सोहनी, गीत सं०-१४

सखि सखि ! करहु एकर उपचारे ।

रहत थिकल मन, दहत सतत तन, चान किरण दुरवारे ॥

उपा—(होश पावि विकलता सहित) -

[गीत सं०-१३]

भावय = सोहाइछ । परकारे = उपाय । मलय-पवन = मलय पर्वतक  
वसात । नलिनी-दल = पुरइतिक पात । घनसार = कपूर । परसि = छुवि ।  
तनु तापय = देहके तप्त करैछ । विधुम = बिनु धूआँक । प्रियुषतम = अमृ-  
तक समान । गरल = विष ॥

[तखन चन्द्रमाक किरणक स्पर्श से दुःख पावि मूर्च्छित होइत छथि । दुहु  
सखी पला हो केत छथि । फेर होय पावि गीतक द्वारा कहैत छथि -]

[गीत सं०-१४]

I—इहत = जरबैछ । सतत = हरवस । तन = देह । दुरवारे = असा-



कुमुदबन्धु क्षिरसिन्धुतनुभव कुम्भ कुसुम सम धामे ।

एहन चाम तन-दहत सतत क्षण असित हृदय परिनामे ॥१॥

(एतदर्थे श्लोकः)

क्षीराक्षिजातः कुमुदस्य बन्धुः कुम्भपसूनमतिमधुरैः ।

तथापि चन्द्रस्तमुदाहकारी स एव हृच्छ्यामललास्वभावः ॥१॥

बडवानल जकाँ उबर मोड़ धरु, किए अलनिधि नहि जाने ।

कालकूट सम जानि मदनहर, किय न कमल तनु पाने ॥१॥

(अत्रार्थे श्लोकः)

क्षीर्वाग्निवर्गो क्षितिर्बुधोय यद्यन्विरेव विषयमुसोव ।

कूरस्तथाध्वेतमुदीक्ष्य शम्भुः पथी दयालुविषयवत्न कस्यात् ॥१॥

राहुदशन विष आय विषण् पुनि, क्षिति विरहित विषवासी ।

तनु हर यमहु खेराधि जगत मह, जे जन अति उत्तमासी ॥२॥

ध्या । कुमुदबन्धु = कुमुद फूलक भित्त । क्षिर सिन्धु तनुभव = क्षीरसमुद्रक देह सौ उत्पन्न । कुम्भ कुसुमसमधामे = कुम्भ फूलक समान छविधरा । असित-हृदय = कारी हृदय (चन्द्रमाक उत्त कुरप हृदय मे बलबुद्धप कालमाक परि-णाम विक) ।

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

ई चन्द्रमा क्षीरसागर सौ उत्पन्न, कुमुदक बन्धु ओ कुम्भ फूलक छविक समान किरणधरा छवि तथापि देह मे बाप उत्पन्न करत छवि — से ई हिनक हृदयक कालुष्यक (कारी रहनाइक) स्वभाव विक ॥ १॥

II — बडवानल = समुद्रक भागि । कालकूट = विष । मदनहर = महां-देव । तनु = हुनक (चन्द्रमाक) ।

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

जौ समुद्र एहि चन्द्रमाके बडवानल जकाँ नुकाय नहि लेलनि, अपितु विष जकाँ छोड़ देलनि सौ हिनका कूर देखि दयालु महुदेव विष जकाँ पीबि कियेक नहि मेलाह ॥ १॥

(एतन्निम्नार्थे श्लोकः)

स्वभानुदण्डोऽपि जहाति तन्मृन्मिथोमिनां प्राणहरः सुधीशुः ।

वितर्ककयामि स्फुटमथ ज्ञेन दमोऽपि दुष्टान्तिरागिवभेति ॥३॥

धीरज धम रह, अचिर मिलत रह, होएत सुधीतल चाहे ।

नृप लक्ष्मीधरसिंह बुझवि रस, हर्षनाटकवि भाने ॥४॥

(इति मूर्च्छति ।)

रामा — (उपाया नाडीनिर्णय संस्कृतमाधित्य)

कदाचिद्वलते नाडी कदाचिद्विस्तराङ्गता ।

एतन्निर्णयतेनास्या जायते परमा दशा ॥५॥

हा हृदय, को उबाओ हृदयसिद्धि । [हा हृदयसिद्धि, क उबाओ भविष्यति ।] (चिक्कलेनाम्पति) सहि चिक्कलेहे ! पेक्क पेक्क राहोए अवस्थ । [सहि चिक्कलेहे ! प्रत्य पदय सकला अवस्थाम् ।]

III — राहुदशन-विष = राहुग्रहक दौतक बीज मे । क्षिति = चन्द्रमा । विषवासी = प्राणनाशक । यमहु = यमराजो ।

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

राहुसौ प्रसित ओलहुँ पर ई चन्द्रमा प्राण नहि स्वागत छवि, अपि तु विषवासीक प्राण हरैत छवि ताहि सौ राष्ट तर्क करैत छी जे यमराजो दुष्टमथ ई अत्यन्त खराहत छवि ॥ ३॥

IV — अचिर = मोछी । सुधीतल = अतिउद्धा ।

(मुच्छिन्न होइत छवि) ।

रामा — (उपाय नाडी देखि संस्कृतक आधय लये) —

नाडी ककनहुँ चलेल आ ककनहुँ स्थिर भय नाइछ । एकरा देखला सौ हिनक अतिम दशा बुझाइछ ॥ ५॥

हाय ! मुदलहुँ ! कोन उपाय होयत ? (चिक्कलेनाक प्रति) लको चिक्कलेना ! देख, देख सकीक अवस्था ।



सोहनो, गीत सं०-१५

कि कहूँ हे सखि ! धनिक विशेष,  
 आय न जिउति अतिविरह कलेस ।  
 परस दग्ध तेज कि कहूँ तोहि,  
 तँ तसु जीवन न निश्चय मोहि ।  
 तसु तनुवेदन देखल न आय,  
 कसन भूषण ते भूमि लोटाए ।  
 नादिक भेष कुसय अनुकूल,  
 कस कङ्कण मेल दाहुक मूल ।  
 कीदहु बिबद्ध अछि सुकुमारि,  
 बुभय चिकुर उर परसि विचारि ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भाने,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥  
 (हृत्पुत्रे विलपतः ।)

चित्र०—हा हृदय ! कथं उण सहीए प्रियजन आनिस्स ।  
 [हां हताऽस्मि । कथं पुनः सख्याः प्रियजनं ज्ञास्यामि ।]  
 रामा—(संस्कृतमाश्रित्य)—

[गीत सं०-१५]

धनिक विशेष = धन्य एहि सखीक हालति । परस दग्ध तेज = हिनक ओछानक स्पर्श सँ देह जरैछ । तनुवेदन = देहक वेदना । वसन = वस्त्र ।  
 चिकुर उर परसि = केश-छातीक स्पर्श कय ॥

(हुहु विलाप करैत छबि ।)

चित्र०—हाय मुइलहुँ ! कोना कय सखीक प्रिय व्यक्ति के जानब ?  
 रामा—(संस्कृतक अवलम्बन कय) —

मुहुर्भ्रमिन्मुहुर्भ्रमं च्छी मुहुस्संजा मुहुर्दंतिः ।  
 सखीहृदयबाधा हि हृत्तास्मात्स्वप्नि दृश्यते ॥१॥

(चित्रलेखाम्प्रति गीतैन)

सोहनो, गीत सं०-१६

हे सखि हे सखि ! करहु उपाय,  
 बिरह वेदन सखि ! सहलो न जाय ।  
 सयन पुरुषरूप मन अवधारी,  
 लप पट विभूषण लिखहु विचारी ।  
 सब तसु चोगहु तेहि नारी,  
 अपन सखी कहूँ लागु गोहरी ।  
 सखि मोर तसु रूप मन अवधारी,  
 पट देखि निज प्रिय चिन्हति विचारी ।  
 रसमय हर्षनाथ कवि भाने,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

चित्र०—(नशिरःकम्प) सहि ! रसमिज्ज नखु मस्तिदं [सखि ! रस-  
 पीयं खनु मन्त्रितम् ।] (इति तथा करोति) ।

बारम्बार भ्रम, बारम्बार मुच्छा, बारम्बार होश ओ बारम्बार चैय—ई  
 सभ जे सखीक हृदय मे बाधा उत्पन्न अछि से हाय ! हमरहु सभ मे देखल  
 जाइछ ॥१॥

(चित्रलेखाक प्रति गीतक द्वारा) —

गीत सं०-१६

सयन = शयनकक्ष मे । पुरुषरूप मन अवधारी = मन मे सुन्दर पुरुष  
 सभक रूपक ध्यान कय । पट = चित्रपट = चित्र लिखवाक कपड़ा । विभू-  
 षण = तीनहुँ लोक मे स्थित युवकके । सबतह = समठाम । सब = सभ के ।  
 गोहारी = रक्षाक उपाय । तसु रूप = तनिक (मनमे स्थित पुरुषक) रूपके ।  
 अवधारी = विचारी ॥

चित्र०—(नाथ हिलबैत) सखी ! बड़ दीस विचार कयलहु अछि । (तहिना  
 करैत छबि ।)



संज्ञाटी, गीत सं०—१७

लेख कर गहि ललित लिखनी सकल संग अनाए ओ ।  
 लिखधि मन दय चित्रलेखा विविध पटु बनाए ओ ॥  
 देव दानव सिद्ध चारण यक्ष राक्षस किन्नरा ।  
 लिखल रघुकुल सकल यदुकुल अनेक अलि जग तरवरा ॥  
 लेख कर गहि बाणतनया देखल पट मनलाए ओ ।  
 निरखि अनिच्छ रूप मन भुनि अंगुलि देल देखाए ओ ॥  
 कयल सखिसँ अधिक विनती करह सङ्ग उपाए ओ ।  
 हर्षनाथ विचारि भन गिरिजा चरण हूयँ लाए ओ ॥

चित्र०—(संज्ञाटी) एसी कलु समुद्रमग्ननिर्मितद्वीपारवदीनगरमग्न  
 वसति, ता कठिनी अस्व सप्तमोवाओ । [एव खलु समुद्रमध्यनिर्मि-  
 तद्वीपारवतीनगरमध्ये वसति तत्कठिनोऽस्य सङ्गमोपायः ।

उपा—(संज्ञाटी)।

(राग योगिया, गीत सं०—१८)

आह द्वारका आजे, तेहि लाजे, मन दय कर मोर काजे ॥  
 योगबल तोहँ सब ठामे, निज कामे, करह गमन अनुपाजे ॥

[गीत सं०—१९]

लेख = लिखत अछि । कर गहि = हाथ सँ पकड़ि । ललित लिखनी =  
 सुन्दर कलम (तुलिका) । तरवरा = उत्तम मनुष्य । अनिच्छ = अनिच्छ  
 (श्रीकृष्णक पौत्र) ॥

चित्र०—(संज्ञाटी) ई तँ समुद्रक बीच से बनाओल द्वारकानगर मे बसैत  
 छथि । तेँ हिनक सप्तमग्न कठिन अछि ।

उपा—(संज्ञाटी)।

[गीत सं०—१९]

योगबल = योगसिद्धि क बल । अनुपाजे = अनुप्राप्त । देखाजे = लाय ।

१ = संज्ञाटी ।

गँ तोहँ करह वैआजे मोर काजे, हम न बिचय सखि ! आजे ॥  
 दक्षिणपवन भेल आमे, परिनामे, हय भवन मोहि ठामे ॥  
 हर्षनाथकवि भावे, परमाने, निखिलपति रस आने ॥  
 (इति चित्रलेखाचरणयो निवर्तति)

चित्र०—(आलिङ्गन योगवेश्य सकलम्)।

(दोहा)

जाए द्वारका आज हग कामतनय महुधीर ।  
 आनि मिलाएब ताहि संग, धरह सुचेतिनि ! धीर ॥  
 (इति सत्वरगमनमभिनयति) ।

उपा—(निरूप्य) कथं यदा ज्ञेय पिअसही चित्तलेहा ? [ कथं गतं  
 प्रियसखी चित्रलेखा ? ] (रामाप्रति संस्कृतमाश्रित्य)।

बहुवित्तवित्ताने प्रेरिता चित्रलेखा

कुण्डमयुलदेहा कामिनी दू-देशम् ।

अविदितबहुभारा द्वारका सा प्रतस्थे

परहि-करणेच्छ न स्मरत्यात्मवाधाम् ॥१०॥

दक्षिण पवन = दक्षिणाही हवा (मलयानिल) । आमे = विपरीत । परि-  
 नामे = अन्तिम अवस्था । हय भवन = कामदेव मारेत छथि ॥

(चित्रलेखाक पयस पर खसैत छथि ।)

चित्र०—(आलिङ्गन कय वैसाय करणापूर्वक)।

(दोहा)।

कामतनय = कामदेवक पुत्र अविदित केँ । महुधीर = महुआंश मे परा-  
 कर्मी ॥ (सीध जयवाक अभिनय करैत छथि) ।

उपा—(देखि) की चल गेलीहि प्रियसखी चित्रलेखा ? (रामाक प्रति संस्कृतक  
 आश्रय लय)।

बहुत विनती क विस्तार सँ प्रेरित भय फुलसनक कोमल देहवाली सुन्दरी  
 चित्रलेखा बहुत भार उठयवा सँ अपरिचित होइत हरद्वार द्वारकाक हेतु प्र-  
 स्थान कयलनि । ओ दोहराक श्रुत करवाक इच्छुक भय प्राण-संकटक  
 चिन्ता नहि करैत छथि ॥१०॥



रामा - सखी ! सखी ! [सखी ! सखी !]  
 उपा - ता बहू धि जहा तहा समय-अवसर्ग पुष्पवाडिअं गच्छहा ।  
 [तदावापि यथा तथा समयनयनार्थं पुष्पवाडिकां गच्छान्ता ।]  
 [इति निष्क्रान्ते]

इति चित्रलेखाप्रस्थापनो नाम द्वितीयोऽङ्कः ॥

## अथ तृतीयोऽङ्कः

[ततः प्रविशति पथि अमरनाटवन्ती चित्रलेखा]

चित्र० - एस समुद्रो, इअं शा दोआरिया, इअं वखु अनिरुद्धस्य घरं, ता  
 एव्य पविशामि [एए समुद्रः इअं सा द्वारिका, इअं वखु अनिरुद्धस्य  
 गृहं तदत्र प्रविशामि ।] [इति प्रवेशमभिनयति ।]

[ततः प्रविशति चिन्ताकुलोऽनिरुद्धः ।]

अनि० - (सर्ववलयम्)

रामा - सखी ! सखी !

उपा - तं अपनोखोकरि जेना-जेना समय बितववाक लेल फुलवाडी खली ।  
 (बाहर भय गेलि ।)

॥ इति चित्रलेखाक विदा करव नामक दोसर अंक समाप्त ॥

## तृतीय अङ्क

[तखन बात मे परिश्रमक अभिनय करैत चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र० - ई समुद्र थिक । ई ओ द्वारिका थिक । ई अनिरुद्धक घर थिक ।  
 तै एतय प्रवेश करैत छी । (प्रवेश करवाक अभिनय करैत छथि ।)

[तखन चिन्ता सँ व्याकुल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनिरुद्ध - (थिकलतापूर्वक) हाथीक समान कोमल गतिवाली, तथा कोधु मे

माते-जेन समानकोमलगतिः कोपे तथा कोमला  
 मुहज्जी मृदुकापिणी मृदुवधा हास्येपि या कोमला ।  
 स्वप्ने मां समुप्राप्ता विधिवशात्स्वस्मिना कोमला  
 जाता सा कठिना कथं मम पुन हँस्वी चित्तङ्गता ॥११॥  
 अपि च--

सोहनी, गीत सं०-१६

हरि हरि देखल अवसरा राधा ।

देखदत अवसरा सुफल कय मानल, पुरल लोचनकामा ॥  
 तखि चपल कचि कठिन कनकमय-वल्ली करि अवधाने ।  
 निजकोशल परमासन कञ्जज, तसु तसु कच निरमाने ॥  
 मदन-धनुष हर-मयन-दहन तहँ, श्यामल केशर शेषे ।  
 लखि चतुरानन भाग जुगल करि, कत तसु भौंह बसेपे ॥  
 मृग अञ्जन खजत मरगञ्जन, लोचन सम निज काँतो ।  
 मानल पञ्चज ते जनि कञ्ज, निज पद देल तसु छाती ॥

कोमल, कोमल अङ्गवाली, कोमल दधनवाली कोमल अवस्थावाली;  
 हँसियो-मे कोमल, तथा यम तरहें जे कोमल भए भाग्य सँ हमर  
 रचन मे हमरा लग अमलीहि से कठोर कोना भय गेलीहि आ हमर  
 धितके ओरायके चल गेलीहि ॥११॥

आजोर,

[ गीत सं०-१६ ]

अमर राधा = अपुनी सुन्दरी । लोचन-कामा = अधिक मनोरम ॥  
 तखि-चपल-कचि = विजलीका सन चञ्चल कान्ति सँ युक्त । कनकमय वल्ली  
 = सोनाक लता । अवधाने = निरचय । परमासन = प्रकाशित करवाक लेल ।  
 कञ्जज = बद्धा । मदन-धनुष = कामदेवक धनुष । हरनयन-दहन = महा-  
 देवक आगिनि जलका कारण । श्यामल-केशर-शेषे = काली फूलक रेखा (मृत)  
 क रूप मे अवशेष रहल । चतुरानन = बद्धा । भाग जुगल = दुइ भाग (जल  
 काँरी धनुषक) । मृग - ..... तसु छाती = हरिण गोजन ओ खड्गमयक



अन्तर-वधुगलमुख लखि रजनीकर, अन्तर-इशमल काली ।  
कनककुम्भ कुच-कुगल दम्भ लखि, विदलित बाहिम छाती ॥  
बाहिम कीजे दम्भ, कनककुम्भ दशनवसन निरसाने ।  
नृप-लक्ष्मीवन्दनसिद्ध दुष्टनि रने, हर्षनाथ कवि भाने ॥  
अपि च—

राज देस, गीत सं० -- २०

रंगोर प्राण पियारी, तुहुमारी ।  
कलन भिरुति बल्लारी ॥  
रापन दम्भ मोहि भेला, विह देला ।  
कञ्जल हरण कय देला ॥  
क्षीयन विषमय बाने, नहि आने ।  
जे मोर हरल पराने ॥  
कि करधे हन परकारे सतमारे ।  
तनि विहू आगु अन्हारे ॥  
हर्षनाथकवि भाने, परमाने ।  
विदिलगति रने जाने ॥  
( इति विन्तामभिनयनि । )

गर्भके चूर करध कला जे लापिकाक अक्षि-तकरा सनक अपन कान्ति मानयक  
कमल, ते अला (नञ्जल) खिसियान के कमलक छाती पर बसर रखते छथि ।  
अमल = स्वच्छ । रजनीकर = लक्ष्मी । अन्तर = हृदय मे । कनक-कुम्भ =  
सोनाक जेल सनक । कुच-कुगल दम्भ = दुनू स्तनक गर्भके । विदलित = फाटि  
गेल । दम्भ = दाँत । कनककुम्भ = मयूरीक फलक स्वरूप । दशन-वसन =  
ढाँर ।

[ गीत सं० -- २० ]

आओर,  
बल्लारी = श्रेष्ठ रमणी । विहू = भाग्य, विधाता । सनकारे = संसार  
जे । परकारे = उपाय ॥

(चिन्ताक अधिनय करैत छथि ।)

चित्र०—कधी एही ती अशिरुहो किमि चिन्ताबापो चिट्ठि ता मावदसस हिमद  
सकैमि । [ कथविमोक्षावनिच्छा किमि चिन्तयन् निश्चयि, तद्यावदस  
हृदयसंभवकयामि । ] ( स्वपावार्थ्ये हिच्छति । )

अनि०—( पुनः मज्जिते तेषां विचरति । )

चित्र०—( निपुनमिच्छन् ) जं एदेव अस्म वज्जणोवण्णोण तवहीअदि,  
एदेवावि जणेण अहाणं सा निजसही सविणे विट्ठा, ता-पिरसद्धं पध-  
समाणि [ तन्वेतेयस्म वज्जणीवण्णोण तवर्धये एतेवाणि जनेवाहमाकं  
मा भियसलो स्वप्ने दृष्टा, तद्विषयमुपगमयामि । ] ( इत्युपगमयति । )

अनि०—( दृष्ट्वा सहर्षं ) कथमियं चित्रलेखा ? चित्रलेखे एषोऽनिरुद्धः प्रणमति ।

चित्र०—सम्पन्नमनोरहो होहि । [ सम्पन्नमनोरथो भव । ]

अनि०—( स्वगतम् ) परममुपहृतोऽस्मि । ( प्रकाशः ) चित्रलेखे ! सकलेश्वर-  
कथाः निरुद्योमिच्छाः किञ्चवागमने प्रयोजनं भवत्याः ।

चित्र०—( गीतेन कथयति । )--

चित्र०—जी ई वषेह अनिरुद्ध किछ चिन्ता करैत ठाढ़ छथि ? हाँ कनेक  
हिमक हृदयक भाव दर्शत छी । ( अह गगनद्वैत छथि । )

अनि०—( धेर 'मज्जिते' श्लोक सं० -- ११ पढ़ैत छथि । )

चित्र०—( नीकजर्का देखि ) निरुद्ध भिनक एहि वचनक उद्गार सँ तर्क  
कथल आइछ जे इहो वेदति हमर शिवालीकेँ स्वप्न मे देखलनि  
अछि । हाँ निर्भय भय लग जाइत छी । ( अग आइत छथि । )

अनि०—( देखि सहर्ष ) जी ई चित्रलेखा बिहीहि ? चित्रलेखा ! ई अनिरुद्ध  
अहाँ केँ प्रणाम करैत छथि ।

चित्र०—पुनर्मनोरथ होउ ।

अनि०—( स्वगत ) कथयतं अनुपहृत ( कृपावाप्त ) छी । ( प्रकाशः ) चित्र-  
लेखा ! सभ ऐक्यसँ ही शुक्त सिद्धयोगिनी अहाँक एहिठाम अवकाश  
की प्रयोजन ?

चित्र०—( गीतक द्वारा कहैत छथि )--



राम खम्भाच, गीत सं०--२१

सखि मोर बाणकुमारी, तुअ गुण लुबुधलि से बरचारी ॥  
गनन रागय सोहि देखो, मिलन मनोरथ करए विखेयो ॥  
तुअ बिनु धरय न धीरे, केन न चिकुर जेतय नहि चोरे ॥  
अनुछन जप तुअ नामे, मन थप तनिक पुरिअ मनकामे ॥  
हर्षनाथकवि भाने, मृग लक्ष्मीधरनिह रस जाने ॥  
अनि०--

राम केदार, गीत सं०--२२

कि कहव तनिक विशेष, माधव ! कहितहु होख कलेस ॥  
आनन करतल शक्ति, माधव ! दिवस समावधि भोखि ॥  
मदनदहन यहू देह, माधव ! लागु विपिन राम मेहु ॥  
निरखि सरसशशि काप, माधव ! मलयपवन तनु पाप ॥  
तुअ संझम अमिलाष, माधव ! छनभरि जीवन रोख ॥  
अचिर खलिअ तसु थाम माधव ! पुरिअ तनिक मनकाम ॥  
हर्षनाथकवि भान, माधव ! मिथिलापति रस जान ॥  
अनि०--चित्रलेखे ! भवत्परा प्रियसखी मयापि स्वप्ने सङ्गता । तदेवमि निर्दयः  
कन्दर्पो मां विशिष्येति कुशति । तस्मादनुग्रहाण मां शोणितपुरनेदनेन ।

[ गीत सं०--२१ ]

लुबुधलि = लोभादलि । बरचारी = उत्तम रमणी । धीरे = धैर्य । केन  
न चिकुर = कैसे के नहि संग्रहहि परेछ । धीरे = बरख ॥

आखोर,

[ गीत सं०--२२ ]

विशेष = अधिक बुद्धि । कलेस = दुःख । आनन करतल = मुँहके  
हाथ पर । अखि = पछताय । मदन-दहन दह = कामदेवकपी आगि  
जलवैत अछि । विपिन राम मेहु = वन राम घर । सरस-शशि = सरस  
आवृत्ताके ॥

अनि० - चित्रलेखा ! अहाँके प्रियसखीक हमहु स्वप्नमें साक्षात्कार कयल ।  
तखन री निर्दय कामदेव हमरा जाणसी कहैत छथि । ते हमरा

(इति चित्रलेखापादयो निवर्तति) ।

चित्र०--(आलिङ्गन उपवेश्य) कय अणुग्रहेण स्वप्नतयण ? एवं होइ । [कथम-  
नुग्रहेण स्वप्नतयण ? एवं भवतु ।] (इत्यनिरुद्धेन साङ्गं गमनमभिन-  
यति) ।

चित्र०--देख यादवनादन ! शोणितपुर पत्त । इदं बख प्रियसखीए निजजन  
शरणधर, ता एतय तुम चिट्ठ । अहं प्रियसखी आनेमि । [प्रोक्षक  
यादवनादन ! शोणितपुर प्राप्तम् । इदं बख प्रियसख्या निजजन  
शरणधर, तदत्र स्व तिष्ठ । अहं प्रियसखीमानंगामि । (इति  
निष्क्रान्ता) ।

अनि०--

सोरठा, गीत सं०--२३

कखन आउति धनि पासे, पुरत हृदय अभिलासे ॥  
रूपुर अवद सुनि कते, कखन होयत परमाने ॥  
कखन देखव भरि आँखी रहम न धरज राखी ॥  
एखनूक एक छन मोही, कोठि कलप सम होही ॥  
हर्षनाथ कवि भाने, आरत नहि परमाने ॥

(इत्यनुकण्ठाभाटयति) ।

शोणितपुर लय जयवाक कृपा कर । (चित्रलेखाक पाए पर खसैत  
छथि) ।

चित्र० - (आलिङ्गन कय वैभाव) की अनुग्रहो मे प्रार्थना होइछ ? रहने होयत ।  
(अनिरुद्धक संग जयवाक अभिनय करैत छथि) ।

चित्र० - देख, यादवनादन ! शोणितपुर आवि गेलहु । ई धिक प्रियसखीक  
एकान्त सुतवाक घर । ते एतय गहाँ रहू । हम प्रियसखीके अनंत  
छी । (बहार भेलि) ।

अनि० -

[ गीत सं० - २३ ]

परमाने = विश्वास । कोठि कलप सम = कड़ोरो कल्पक समान ॥  
(उत्कण्ठाक अभिनय करैत छथि) ।



(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र०—इअं पुष्पवाटिका, एतथ प्रियसखी हुविस्सदि, ता एतथ प्रविशामि ।  
[इअं पुष्पवाटिका, अथ प्रियसखी भविष्यति तदथ प्रविशामि ।]  
(इति प्रवेशमभिनयति) ।

(ततः प्रविशति उषा रामा च ।)

उषा—कथं अज्जावि ण आअदा पिअसही चित्तलेहा । [कथमद्यापि नागता प्रियसखी चित्रलेखा ?]

रामा—(निपुणस्त्रिरूप सहर्ष)पेक्ख पेक्ख, इअं आअदा सा । [प्रेशस्व, प्रेश-  
स्व, इयामामता सा ।]

उषा—(दृष्ट्वा सहर्षमालिङ्ग्य) सहि ! चिरेण लोअणाणि सीदलेसि ।  
कथंहि, आणीओ सो अणो ? [सखि ! चिरेण लोचने सीतलवसि ।  
कथय कथय, आनीतः स जनः ?]

चित्र०—अथ इ ? [अथ किम् ।]

उषा—कहि चिट्ठदि ? [कुत्र तिष्ठति ।]

चित्र०—तुज्झ सअणवरे चिट्ठदि । ता तुमं दि अहिंसारोचिअ-वेशं कहुअ

[तत्क्षणं चित्रलेखा प्रवेशं करोति छधि ।]

चित्र०—ई कुलवाडी धिक, एतथ प्रियसखी होगतीहि, त एतथ प्रवेशं करोति  
छी । [प्रवेशक अभिनयं करोति छधि ।]

[तत्क्षणं उषा ओ रामा प्रवेशं करोति छधि ।]

उषा—कियेक एतथ धरि प्रियसखी चित्रलेखा सहि अयलीहि ?

रामा—(नीकजकां देखि सहर्ष) देवु देवु, इमेह अयलीहि ओ ।

उषा—(देखि सहर्ष आलिङ्गनं कथं) वहीकाल पर आंखि जुडओलहुं । कहू,  
अनलहुं ओहि व्यक्ति के ?

चित्र०—त आओर की ?

उषा—कतप छधि ?

चित्र०—अहाँक सयनगृह मे छधि । ते अहाँ अभिसारक उचित वेश बनाय

तस्य अहसर । [तत्र सयनगृहे तिष्ठति । तस्यमपि अभिसारोचितवेशं  
कृत्वा तत्राभिसर ।]

रामा— कल्याण, गीत सं०—२४

अभरन वसन करिअ तनु साजे,  
स्वरित बलिअ सखि पढुअ समाजे ॥  
अखन सयनगृह करिअ पमाने,  
छन भरि करव हृदय समधाने ॥  
टाढ़ि रहव मुख प्राणि लजाई,  
हठहि बोलिअ णनु कोटि उपाई ॥  
बहुविध विनति जनावधि प्रीती,  
तखन करव सखि नेहक रीती ॥  
रसमय हर्षनाथकवि आनं,  
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

उषा— सोहनी, गीत सं०—२५

हे सखि हे सखि ! परिहरि मोही,  
करजोरि विनति करिअ हम तोही ॥  
प्रथम समागम अधिक तरासे,  
सुमरि सुमरि जिव उड़य हवासे ॥

ओतयक लेल प्रस्थान करू ।

रामा— [गीत सं०—२५]

अभरन वसन = गहना ओ कपड़ा । स्वरित = सीझ । पमान =  
प्रस्थान । हृदय समधाने = हृदय के स्थिर कय धैर्य धरव ।

उषा— [गीत सं०—२५]

परिहरि = छोड़ि दिअ । तरासे = डरा पुलक भरय = आतश्चित होइछ ।  
पहुयेहा = पतिगृह ।



चलप न चरण सुख नहि मोही,

शाम भरल तन की कहव तोही ॥

पुलक भरय पुनु कपय देहा,

हम न जायव सखि हृति पहुगेही ॥

रसमय हर्षनाथकवि भाने,

तू प लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(ततः सखी हस्तं गृहीत्वा बलाश्रयतः । सा च सभयलज्जं जनैर्गच्छति ।)

रामा—सहि चित्तलेहे ! पेक्ख पेक्ख सहीए खं । [सखि ! चित्तलेहे ! प्रेक्ष-  
स्थ प्रेक्षस्व सख्या रूपम् ।]

चित्र०—(निपुणविरूप्य गायति)—

राग केदरा, गीत सं०--२६

चललि शयनगृह सुन्दरि, सजनी

नील वसन तनु साजि ।

कनकलता जनि भैरव, सजनी

अविरल मधुकर राजि ॥

लटिक विन्धु अरु सिन्दुर सजनी

विन्धु विराजित भाल ।

जनि पङ्कज दल रवि शशि, सजनी

उदित भेल एक काल ॥

[तखन दुहू सखी हाथ पकड़ि बलजोरी लय जाइत छथिन । आ ओ  
वर ओ लाज सँ मन्द-मन्द जाइत छथि ।]

रामा—सखी चित्तलेखा ! देखू देखू, सखीक रूप ।

चित्र०—(नीकजकी देखि गवीत छथि)—

[गीत सं० - २६]

नीलवसन तनु = देह पर नील रंगक वस्त्र । कनक-लता = सोनाक  
लता पत्र । अविरल = सधन । मधुकर राजि = भैरवक समूह ।

ललित दशन-रवि क्षुण्णम, सजनी

अधर नवल दल राज ।

जनि बन्धूक कुसुम-तर, सजनी

विवसित कुन्दसमाज ॥

चरण जुगल अनुरञ्जित, सजनी

ललित जुगल—बह शोध ।

गज-युग पाणि पसारल सजनी

जनि तब—पल्लव लोभ ॥

जनयतनी पदसेवक, सजनी

हर्षनाथकवि गाव ।

रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी

तू प पुन मन दय भाव ॥

अपि च—

मालवरागे गीतम्--२७

चललि केलिगृह सुन्दरि रे सखि कर गहि लेला ।

प्रथम समागम तब मुनि रे, तनु पुलकित भेला ॥

ललित कोर मुख-पङ्कज रे, छवि देत विशेषे ।

जनि पूरण—शारद-मणि रे, वामिनि परिधेये ॥

चिकुर विरचि कमि बाढल रे, मुज सुन्दर सारे ।

अमिथ लोभ क्षमि—मण्डल रे, विपधर परचारे ॥

लटिक विन्धु = पतरखड़ीक छीप । पङ्कज दल = कमलक पत्ती पर ।  
रवि = सूर्य । क्षमि = क्षम । दशन-रवि = दैतिक चक्षक । अधर नवल  
दल = छोटे नवल पल्लव सन । राज = बोधित । कुसुम = मधुरीक  
फूलक । कुन्द-समाज = कुन्द फूलक पात्री । अनुरञ्जित = रङ्गल ।  
जुगल-उक = दुनु जाँघ । गज युग = दू गोटे हाथी । पाणि = हँड ॥

आधोरो,

[गीत सं० - २७]

तनु = देह । पुलकित = आनन्दित । ललित कोर = सुन्दर किनार  
(बाकूपातक सीमा) । मुख-पङ्कज = मुखको कमल । छवि =



सुखजन मानस हाटक रे, अनुजन कर चोरी ।  
 मेँ जनि कुचयुग वाटल रे, दिह कञ्चुक खोरी ॥  
 हर्षनाथ कविनेखर रे, यत्नमय इहो पाये ।  
 लक्ष्मीधरसिंह मुणमय रे, मन दय दुसु भाये ॥

(इति सार्धः शयनप्रवेशमभि-वर्ति ।)

अनि०—(दृष्ट्वा सहर्षं) कथमागतैव महर्षिपत्नी ? सावदेनां निरीक्ष्य लोचने  
 शीतलपामि । (इति सातन्धरोभाञ्चं पश्यति ।)

(तत्कल्पवती बाणपुत्रीमनिददाय सन्वर्षयतः ।)

अनि०—(करे गृह्णाति) ।

रामा—(अनिद्वन्द्वप्रति)—

राग इमन्, गीत सं०—२८

सुपक्ष ! हृदय विचारि रे, मुनिज वचन अवधारि रे ॥  
 धनि मोर किल नहि जान रे, राखब हिनक अभिमान रे ॥

सुन्दरता । गुरुराज-शशि = सूर्य ऋतुक पूर्णवत् । दामिनि पति-  
 वेपे = निजुरी सँ धरल । चिकुर विरचि = केश केँ गृहि । अमिज-  
 लोभ = अमृतक लोभे । शशि मण्डल = चन्द्रमण्डल पर । विषधर  
 परचारे = सँघि चलैत अछि । सुखजन-मानस = सुखक मनसुनी चोरा  
 हाटक = रत्न । कुचयुग = दुनु स्तनकेँ । दिह = कसिकय । कञ्चुक-  
 खोरी = कोलीक खोरी सँ ।

(समकेशो शयनगृह मे प्रवेशक अभिय करैत छथि ।)

अनिद्वन्द्व—(देखि सहर्षं) को आनि गेलीह हमर प्रिया ? तँ आव हिनका देखि  
 अछि जुड़बैत छी । (आनन्द ओ रोमाञ्च सहित देखैत छथि ।)

[तखन दुहु सखी अनिद्वन्द्वकेँ उपा समर्पित करैत छथि ।]

अनि० = (दुनु हाथ धरैत छथि ।)

रामा = (अनिद्वन्द्वक प्रति)--

[गीत सं० - २८]

अवधारि = जान कय । धनि = धन्या नायिका । रोप = लामस ।

पड़्य हिनक जखोँ दोष रे; करिअ तकर नहि रोष रे ॥  
 सहय लाख अपराध रे, मुजन करय नहि बाध रे ॥  
 हर्षनाथकवि भाव रे, मिथिलापति रस जान रे ॥  
 अनि०—परमवृद्धीतोऽस्मि (इति शिरस्थञ्जलि पटयति) ।  
 (सखी निष्क्रामतः) ।

उपा—(सर्वजन्मधोमुखी तिष्ठति ।)

अनि०—(उपाया मुखमुन्नमय) —

गीत मुलतानी—२९

विरह इयव मोर तनु अनुमानी ।  
 वचन-मुधारस भिबह सेशानी ॥  
 वसन दूर कर आनन चन्दन ।  
 नयन—चकोर मोर कर सागन्दा ॥  
 कर जोड़ि विनति करिअ हुग तोही ।  
 एक केरि नयन निहारिअ मोही ॥  
 अधर अमिज रस कर परमासे ।  
 करिअ कुतारथ अनुगत गाने ॥  
 तुभ गुण बुझि अपलहुँ एहिठामे ।  
 परसनि भय परिपूरिअ कामे ॥

सुजन = उत्तम व्यक्ति । दाध = दाधा ॥

अनि०—अल्पमत अनुगृहीत छी । (कर जोड़ि माव मे लगवैत छथि ।)  
 [दुनु सखी चल गेलीहि ।]

अनि०—(उपाक मुँह उठाय) —

[गीत सं० - २९]

विरह-रगञ्ज = विरह सँ जरल । तनु = देह केँ । अनुमानी =  
 विचारि । वचन-मुधारस = वचनरूपी अमृतक रस । सेशानी =  
 चतुरनायिका । वसन = वस्त्र । नयन-चकोर = आँखिरूपी चकोर



रसमय हर्षनाथकवि भावे ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(इति श्रवणे उपदेशार्थः ।)

(ने पथ्ये—इसी इषी पिअसही ।) [इत इतः प्रियसखी ।]

उवा—कथं पिअसहीओ आअच्छति, ता अहमि गच्छेमि । [कथं प्रियसखा-  
वागच्छतः तदहमपि गच्छामि ।] (इत्युत्थाय प्रचलिता) ।

अनि०—कथं गतेय प्रेयसी ? तदहमपि बहिर्भवनमाह्लिककर्मणे गच्छामि ।  
(इति निष्क्रान्तः) ।

(ततः प्रविशतश्चित्रलेखा—रामे)

रामा—कथं एसादपाआ रअणी ? तथा हि—[कथं प्रभातप्राया रअणी ।  
तथाहि—]

गीत ललित—३०

मखि मखि ! ललित समय लख भोर ।

नागर-नागरि, रइनि रङ्ग करि शयन करय प्रियकोर ॥

पक्षी (जे चन्द्रमाके देखि प्रसन्न होइछ) । अघर-अमिअ रस=  
होरखपी अमृतक राखे । अनुगत अ शरणागत । परसनि = प्रसन्ना ॥

(ओछाओन पर देखेते छवि ।)

[नेपथ्य मे—'एम्हरहि बढे' प्रियसखी ।]

उवा—ही प्रियसखी लोनि अबेत छवि ? त हमहूँ जाइत छी । (ऊठि बिदा  
भय गेलीहि ।)

अनि०—कौ चले गेलीहि प्रिया ? त हमहूँ बाहरक घर मे गित्तकूपक हेतु  
जाइत छी । (बहार भय गेलाह )

[तत्र चित्रलेखा ओ रामा प्रवेश करैत छवि ।]

रामा—की भिनसरवा राति भय गेल ? जेना कि—

[गीत स०—३०]

नागर नागरि=नायक नायिका । रइनि = रङ्ग = रातुक केलि ॥

धीवर अङ्क, मयङ्क तरणि बहि, शशिकर जाल पसार ।

उडुगन-भीन बभाए चलल अनि, मगन पयोनिधि पार ॥

रवि कर कलित तिभिर-पट-मोचन, अकट अरुण-तेनु भास ।

लाज पुरव दिश, भुनक, कुमुद दश, छवि कपलनि कह होस ॥

मलय पवन कम्पितानु, कमलनि, कोप अरुण करि अङ्क ।

उपगत मधुकर, करय विराहर, कुमुदिनि-सङ्ग पिसङ्ग ॥

पति बञ्चित-रसि, दुवति विफल मति, करति सौति अभिभाष ।

पति-गञ्जन सहि, त्रिदिश वचन काहु-करत दोष अपलाप ॥

गुञ्जत मधुप, बिहङ्गम-कृजत, शयन कुशल जनि भाष ।

हर्षनाथ कवि बचन मुखारस विरल, रसिक जन चाप ॥

इदानीं पिअसही सअनघरादो ण आअदा । (पुनर्निर्गम्य)

धीवर-अङ्क = चन्द्रमाक कलङ्क (कालिमा) खपी मलाह । मयङ्क =

तरणि = चन्द्रमाखपी वेइ (ताओ) पर । शशिकर-जाल = चन्द्रमाक

किरणखपी जालके । उडुगन-भीन = तरेगनखपी मछि । मगन-पयो-

निधि = आकाशखपी तामुद्रक ॥ रवि = सूर्य । करकलित = हाव

(किरण) सँ एकड़ि कय । तिभिर-पट-मोचन = अन्धकारखपी धस्नके

हटयवाक हेतु । अरुण-तेनु भास = लाल देह (अमुरक) शोभित छवि ।

पुरव दिश = पूर्वादिश (नायिका) कुमुदिनीक फूलखपी आँखि मुनि

लेलक ॥ मलय पवन = दछिनाही हवा सँ कँपाओल वेहवाली कम-

लिनी । कोप अरुण = कोप सँ लाल । उपगत मधुकर = आबल औरा

के (घोर मे उपस्थित नायकके) । कुमुदिनि-सङ्ग-पिसङ्ग = कुमु-

दिनीखपी नायिकाक समागम सँ ललित भूरा रंगक (ओरा के) ॥

पतिवञ्चित रसि = पतिक द्वारा सभानेम सँ बञ्चित (छल कदल

केल) । पति गञ्जन सहि = नायक नायिकाक कथनति सहि के । दोष

अपलाप = नायक अपन दोषके कहैत छवि ॥ मधुप = औरा । बिह-

ङ्गम = पक्षी । शयन = सतवाक, शयनसूहक ॥

एखन धरि चित्रलेखा आबतगृह सँ नहि आयलीहि अछि । (कर



कथं आभवाज्जेव ? [इदानीमपि प्रियसखी शयनगृहाभ्यागता । कथं-  
मागतैव ?]

उवा—[क्षणमपान्तरं सख्यावालिङ्गति ।]

रामा—सखि ! कथं हि कथं हि, पङ्कजं समागमं वृत्तम् । [सखि कथय प्रथमस-  
मागमवृत्ताम् ।]

उवा—[गीतेन]—

ललितं, गीतं सं०-३१

मनं दधे मुनिश्च वचनं सखि आने ।

सुपटुं समागमं कथितवुं लजे ॥

रसमयं पटुं अञ्चलं महि लेला ।

लाजं वदनं मोरं अवन्त भेला ॥

जखन अवर रस कयलनि पाने ।

लाजं चिकुरं कुनि कयल पमाने ॥

कुचयुगं परसि कएल हंसि कोरा ।

लाज लजाए पड़ाइलि मोरा ॥

सुमरि सुमरि सखि ! तसुं व्यवहारे ।

गदगद स्वर पुरुकित तनु भारे ॥

रसमयं हर्षनामकथि आने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

देवि) की आन्त्रिये गेलीहि ?

उवा—[पायल केँ मनअनवौत बुहु सखीकेँ आलिङ्गित करैत छथि ।]

रामा—सखी ! कहूँ कहूँ, प्रथम-समागमक वृत्तान्त ।

उवा—[गीतक द्वारा]— [गीत सं०-३१]

अवन्त = झुकल । लाज चिकुर = लाज सँ केश झुजि । पमाने =  
विदा भेल । कुचयुग परसि = दुनु स्तनक स्पर्श कय । कोरा = अञ्क  
ने । लाज लजाए = लज्जा स्थल लज्जित भया । पुरुकित तनु = आत-  
न्वित शरीर ॥

रामा—महि वाणपुत्री ! पुष्पलावरस परे कलअलो सुषोअधि ता वञ्चयि  
नच्छहा [सखि वाणपुत्री ! तब तातस्य गृहे कलअलः श्रूयते । तद्वचमपि  
तव मच्छामः ।]

[इति निष्क्रान्ताः] ।

॥ इति अनिरुद्धसमागमो नाम तृतीयोऽङ्कः ॥

★

## अथ चतुर्थोऽङ्कः

[ततः प्रविशति वाणाशुरः]

वाणाशुरः—कः कोऽयं श्रो !

हारी—[प्रवेशम्] जयहु जयहु देवो । एमोऽस्मि, आज्ञावेदु देवो । [जयहु  
जयतु देवः । एमोऽस्मि, आज्ञापयतु देवः ।]

वाणः—कथय मदन्तःपुरदत्तम् ।

हारी—[गीतेन कथयति]

रामा—सखी वाणपुत्री ! अहाँक जित्ताक घर मे हुइला सुनि पढ़ैछ त हमरहु-  
लाकनि बली ।

[यम बहार भेल]

[अनिरुद्ध-समागम नामक तेसर अंक समाप्त ॥]

चारिम अङ्क

[वाणाशुर प्रवेश करैत छथि ।]

वाण—कथो अछि ?

हारी—[प्रवेश कय] जय हो, जय हो देवक । इयेह छी, आज्ञा देव देव ।

वाण—कहूँ हमर ह्योहीक (अन्दरक) समाचार ।

हारी—[गीतक द्वारा कहैछ]—



नट रागे, गीत सं०-३२

कि करव नीच-कथा परमास,

कहि न सकिअ किछु होइ तरास ।

नागर एक मनोभव-वेश,

कयल कुमरि-मन्दिर परवेश ।

भेलिह तनिक बर राजकुमारि,

एतवा बयलहुं नयन-निहारि ।

किहरिअ मग मुनि एकर विचार

राजकुमरि भेलि कुलक अज्ञास ।

हर्षनाथ कवि मन दय गाव,

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह वृक्ष भाव ।

वाणः - हा हतोऽस्मि !! महनि कुले कलहुँ बातः । (सर्वकलव्यम्) -

लब्धा युद्धकुले भविस्सुद्विहिता सेवा मुधानीपते

निषिद्धास्मात्परदैत्यदानवकुलं लब्धः प्रतापोऽधिकः ।

भ्रातृत्वं सारजन्मानोऽवधिरसन्तस्यापि मे मानुषाश्च

सखजातं कुलधर्पभङ्गमहो चिंता गतिः कर्मणाम् । १३॥

[गीत सं०-३२]

तरास = डरा । नागर = चतुर युवक । मनोभव-वेश = कामदेवक रूपमे (जतिसुन्दर) । कुमरि-मन्दिर = कुमारी उपासक घर मे ॥

वाण-हाथ मुझहुँ !! महान् कुलमे कलहुँ लागल । (विकलता पूर्वक):-

युद्ध कुल मे जन्म पावि पार्वशीपतिक (सहायक) सेवा कएल, सकल देवता-दैत्य ओ राक्षस केँ जीति पैंस प्रताप बाबोल । काशिकेसक जाए होएबाक गौरव सेहो प्राप्त कएल । एहन यश पओनि-हारो हमरा मनुष्य सेँ कुलक रक्षन भेल । हाय!! कर्मक गति विचित्र छेक । १३॥

अभिषेक-

ललित रागे, गीत सं०-३३

कक्षीग दुरित फल बिह भेल बंके,

एहन पवित्र कुल भेल कलके ।

कि करव आव कुलक अधिमाने,

रो जगमलि जे कटलक काने ।

सुर गर मुनिमग परिजन साथे,

कोन बनि बर करव हम साथे ।

मन कर गरल हरिअ हम पाने,

अभिनि गमन करि तेजिय पराने ।

हर्षनाथ कवि मन दय गावे,

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह वृक्ष भावे ।

(शुनस्सतीर्थ करान् करैः प्रसीदन्)-

वसन्त रागे, गीत सं०-३४

सहस्रभुज गौर करि अनादर, कयल कुल अधिमान ओ ।

जेशुन जे जने परम दुर्जन, हरिअ तनिक परान ओ ।

दैत्य दानव यक्ष राक्षस, देवमण लय साथ ओ ।

तनिक होसि सहाय अओ पुनु, सखक कटाव माय ओ ।

आओरो,

[गीत सं०-३३]

दुरित = वाप । बिह भेल बंके = विवादा विपरीत भेलाह । गरल = किया ॥

(फेर कोधपूर्वक हाथकेँ हाथसँ दाहि)-

[गीत सं०-३४]

सहस्रभुज मोर = हजार भुजावाला जे हम तकरो । दैत्य = राक्षस जे दक्षिक सन्तान अछि । दानव = राक्षस जे वन्य सन्तान अछि । यक्ष = देवपौनविशेष । राक्षस = देवपौनविशेष जे निकषाक सन्तान



हमर भुजङ्गर असुर-सुर नर, ममत्त कम्पित गात ओ ।  
 के एहन जग माह, जे जन-करखि नहि प्रणिपात ओ ॥  
 करब आज अन्हार बहदिस, विशिख लख रण जाए ओ ।  
 हर्षनाथ बिचारि भन, निरिजा चरण हिस जाए ओ ॥

(पुनः सक्रोधे) गृणु रे द्वारिन् ! सत्वरन्वगाहि किकरसीन्-  
 समुद्योगम् ।

द्वारी—वेधा । [ तथा । ] (इति निष्कान्तः ।)

(नेपथ्ये—) भो भो! किङ्करादिगणः ! सीधं वेष्टयिष्यामि सज्जोभवन्तु  
 भवन्तः ।)

(पुनर्नेपथ्ये—) वेष्टितमरुमाभिरुद्धमस्तम्भम् ।)

बाणः—कथमागतं किङ्करसंस्थम् ?

(पुनर्नेपथ्ये—) प्रहरन्तु प्रहरन्तु भवन्तः । एष रतिमस्करः परितः  
 आगत्यस्तिष्ठति ।)

बाणः—कथमुपकान्तमेव युद्धम् ? तदहमपि तस्य देवदूतस्य पराक्रमं गत्वा

अस्ति । असुर-देव । गात-गरीर । जगमाह-संसारमध्य ।  
 प्रणिपात-पाएर पर माथ झुकवैत छवि । बहदिस-दयो दिशा ।  
 विशिख-बाण । रण-युद्धक्षेत्र ।

(फेर कोशक) गुन रे द्वारपाल ! भरदव जो, सेवक ओ सेनाक जसो-  
 मक हेतु ।

द्वारी—वेस । (बहुर जय गेल ।)

[ नेपथ्य मे—'हे हे सेवकलोकनि ! फीडाकेँ घेरि अहाँलोकनि तैमार  
 रहै' । ]

[ फेर नेपथ्य मे—'हमरासव हवीदीकैँ खेरलहुँ' । ]

बाण—की सेवक-सैन्य आवि गेल ?

[ फेर नेपथ्य मे—'मारु मारु अहाँगज । ई जमचोर लोहाक डण्डा  
 धुमाय रहल अस्ति' । ]

बाण—कौ युद्ध जगिए गेल ? त हगहूँ ओहि अभगलाक पराक्रम पाव देखि-

पश्यामि । (इति निष्कान्तः) ।

(ततः प्रविशन्ति परिवर्तमानिनिरुद्धः)

अनि०—एषांऽश्मसुरकुलं नाशयामि । अस्मांस्मद्विक्रमं पश्यन्तु लोकाः ।

(नेपथ्ये—) हा हदस्ति !! अजतउत्तस्य का अवस्था हुविस्सदि । [ हा  
 हुताऽस्मि ! अद्य वर्णपुत्रस्य का अवस्था भविष्यति ? ]

अनि०—कथमियमस्मद्विक्रमं नसी वाणसंवाप्तमसुप्तोन्मादकस्य भयविह्वला किमपि  
 विलपन्ती इत एवाभिवर्त्तते । हृष्टाधरेना समाश्वासयामीति ।  
 (साम्प्रतीक्षमाणस्तित्ठति ।)

(ततः प्रविशन्तुषा । पुनर्हा हदस्ति) [ हा हुताऽस्मि । [ इत्यादि पठति ]

अनि०—त्रिमे न भेदधम् ।

(बोहा)

बाण सहित जेत असुरगण, सभक करव हम नाश ।

अखिर मिलव हम तोहि पुनः सुन्दर तेज तरास ।

सैक । (बहुर मध्य गेलाह ।)

[ नयन हाथमे ओहक डण्डा छैन अनिरुद्ध प्रवेश करैत छवि । ]

अनि०—हमह हम देवगण के नष्ट करैत छी । आइ हमर पराक्रम देखओ  
 लोकसभ ।

[ नेपथ्य मे—'हाथ मुदलहुँ !! आर्यपुत्र की अवस्था होयतनि !' ]

अनि०—की ई हमर प्रेपसी उवा बाणासुरक धुडकरबाक उद्योग सुनि डरे  
 कितल भेल कितल विलाप करैत एहहरहि अवैत छवि ? त जमके  
 दिनका अत्यवाप्तन दैत छी । (धुडके प्रतीक्षा करैत ठाढ़ रहैत अस्ति ।)

[ तबजत उवा प्रवेश करैत छवि । फेर 'हा हदस्ति' इत्यादि बजैत  
 छवि । ]

अनि०—अरे ! डर जगु करो । (जया के आश्वासन दय श्रीज युद्धक हेतु बहुर  
 भय गेलाह ।)



(इत्युपां समाप्तस्य सत्वरं मुद्राय निष्क्रान्तः)

उपा० - कथं गदा अञ्जउणी, ता अहं पि देई प्पसादेई मच्छेमि [कथं गत आय्यपुत्रः? तदहमपि देयी भनययितुं मच्छामि ।] (इति निष्क्रान्तः)

[अथ विष्कम्भकः]

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्रलेखा - अथ रणवृत्तिं विजानितुं येमिदो चारो विराअदि । कथं रणवृत्तिं विजानुं प्रेषितश्चारश्चिरायते । (पुनस्सर्व्वतोऽवलोक्य) अअं आअदो अजेइ । अयमागत एव ।

(ततः प्रविशति चारः)

चारः - इयं चित्रलेखा । मद्यावदुपसण्यामि (इत्युपसर्पति) ।

चित्र० - कथं हि कथं हि, रणवृत्तिम् । किञ्च कथं रणवृत्तिम् ।

चारः - मृणुं सर्व्वम् -

गीत लाउति-३४

रथ खड्गि बाण-महाभूर आयल, लय चतुरङ्ग बल धीरे ।

किं गहि परिष अमुरकुल सारल, अनिकथ चाक्ख वीरे ॥१॥

उपा० - की चल गेलाह आयपुत्र ? त हमहूँ देयीके पक्खन के रवाक लेल जाइत छी । (बहार भय गेलि ।) ॥

[विष्कम्भकः]

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करै छति ।]

चित्र० - युद्धक समाचार बुझबाक हेतु पठाओल दूत किएक देरी करैत अछि ? (केर चाकभर देखि) इयेह त आविए गेल ।

[चार प्रवेश करैछ ।]

चारः - ई चित्रलेखा धिकीह । त आव समीप जाइत छी । (समीप जाइत छति ।)

चित्र० - कहह कहह, युद्धक समाचार ।

चार - तूत सबटा ।

[ गीत सं० - ३५ ]

१ चतुरङ्गबल = हाथी घोड़ा रथ ओ पण्डल एहि चारु अङ्ग सँ युक्त

चित्र० - (सहर्षं) उज्जोविदहि । तदो तदो । उज्जोविताअस्मि । ततस्ततः । चारः -

काम-तनय डर सकल पड़ावल, जत छल रिपुबल वीरे ।

चित्र० - (सहर्षं) इअं पारिवोसिअ नेव्ह [इदं पारितोषिकं गृहाण] (इत्यङ्गमु-  
रितकम्पदाति) । तदो तदो ततस्ततः ।

चारः -

तयन निरखि केहुँ कुपित भेल पुनु, बाण-नृपति रण-धीरे ॥२॥

चित्र० - हा संशयद्विग्न । तदो तदो । हा संशयितास्मि । ततस्ततः ।

चारः -

जययारि जनिक समान आन सहि, रिपुकुल कम्पित जाही ।

नामवाश लय बुद्धकय बंधलक, कपल अपत बल ताही ॥३॥

चित्र० - (सवीकृत्य) हा हृदसि । तदो तदो । हा हृताअस्मि । ततस्ततः ।

चारः -

कामतनुज तन कम्पन अपजत, सेज न निय अभिमन ।

नृपालमीश्वरसिंह बुझवि-रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

चित्र० - तदो तदो । ततस्ततः ।

सेना । धीरे = धैर्यवान् । परिष = लीहृदय ॥

चित्र० - (सहर्षं) प्राण धुरि आयल । तखन ?

चार - कामपुत्र अनिच्छक धरे सभ शत्रुपक्षक वीर भामि गेल ।

चित्र० - (सहर्षं) ई इनाम लएह । (ओंटी बँत छति ।) तकर बाद ?

चार - अपना आंखि सँ ई देखि पराक्रमी राजा बाण कुपित भेलाह ॥२॥

चित्र० - हाय ! संदेह मे पड़लहुँ । तखन ?

चार - रिपुकुल = शत्रुगण । कम्पित जाही = जनिका सँ थरइत अछि ।

नामवाश = सर्व्ववन्धी । बुद्धकय = कसिकय ॥३॥

चित्र० - (विकलतापूर्वक) हाय मुइलहुँ । तखन ?

चार - काम-तनुज = कामक पुत्र (अनिच्छ) के । तन = देह भे । निय अभि-  
माने = अपत गयो ॥४॥

चित्र० - तकर बाद ?

चारः - तत्रैवानिच्छेत् हनुमुद्यत्तं वरणासुरं जामातास्य न हस्तस्य इति कुम्भा-  
ण्डो निवर्त्तयामास ।

चित्र० - सुदृष्टं हिंसां गतिराणम् । सा रणवृत्तिं निवसतीति निवेदितुं गमिसं ।  
तुम्हारे पुणो तद्वृत्तिं निजान्तिदुं तत्त्वं अहिसर । मुष्टं कृतं मन्त्रिरा-  
जेन । तद्वृत्तिं निवसतीति निवेदयितुं गच्छामि । त्वमपि पुनस्तद्वृत्तिं  
विजानुं तज्जासिसर ।

चारः - तथा ।

(इति निष्कासो)

(इति चित्रकम्भकः १)

(ततः प्रविशति नागपाशवज्रोऽनिरुद्धः)

अनि० - (सर्पबन्धनवधाम्नादयत् स्वगतं) किमिदानीमनुष्ठेयं, कथं बन्धनोक्षो  
भविष्यति ? (विमृश्य) भगवत्या दुर्गताः प्रसादमात्रेण को वा प्रती-

चार - तस्मिन् अनिरुद्धके गारवाक हेतु तेषार वरणासुरके गमत्रो कुम्भाण्ड  
रोकलथिम्ह जे ई जमाय विकाह हिनका गारव उचित नहि ।

चित्र० - बड़दीन कयलनि मन्त्रिराज । त मुष्टक समाचार प्रियसखी के निवे-  
दित करवाक लेल जाइत छी । तौहू फेर ओहि समाचारके बुझ-  
बाक लेल ओतय जाह ।

चार - वेम ।

[हुनु गेटा बहार भेल ।]

[चित्रकम्भक समाप्त]

[आव नाग-कानी से जकड़ल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनि० - (ताप से बान्हल रहबाक कष्ट प्रदर्शित करैत मनहि मन) एखन की  
करी, कोना बन्धन से छुटकारा होयत ? (विचारि) भगवती दुर्गाक

१ - भुज वा भविष्य कथाशक मध्यम-पात्र द्वारा वर्णन अंक मध्य वा अन्त  
मे जे जोड़ल रहैल से चित्रकम्भक कहबैछ ।

कारो भविष्यति ? तद्यावत्तामुपश्लोकयामि । (साञ्जलिबन्धं प्रका-  
शम्) -

गीत खोरठ-३६

जय जय महिषविनाशिनि भगवति, सिंहगमनि जगदम्बे ।  
त्रिभुवनसारिणि, विषहनिवारिणि, सकल भुवन अवलम्बे ॥  
त्रिदश तपोधन, क्षुब्ध मनुज गण विकुर निकर अधिरामे ।  
तुअ पद चिन्तय, विमुख सतत मन, किबहु होएत परिणामे ॥  
हमर दुरित मति, जानि सकल गति, करिअ न अतिशय रोषे ।  
तनय रहित मनि, करय अन्तर्गति, कहिअ ककर धिक होषे ॥  
तुअ तुण निगम अगम हरिहर-विधि कहि न सकथि अनुपामे ।  
अनेक जनम तव करथि जन्म दय, तुअ पद दरशन कामे ॥  
क्षमिय हमर अपराध कृपामयि, करिअ अन्तय वर दाने ।  
गिरिनन्दिनि पदपङ्कज मधुकर, हर्षनाथ कवि आने ॥

(इति तावद्यावति ।)

कुशाक बिना कोन प्रती गार होयत ? त तःइत हुनकहि मोहरबैत छी ।  
(कल जोरि सुनाय) -

[गीत सं०-३६]

महिष-विनाशिनि = महिषासुरक नाश कयनिहारि । सिंहगमनि =  
विह पर चलनिहारि ॥ त्रिदश तपोधन = देवता, ऋषि, दैत्य ओ  
मनुष्यसभक मौखिक केशक समूह भिड़ला सँ सुन्दर जे अहाँक करण  
नकर ध्यान सँ विमुख जै मन रह्य त । किबहु = किछुओ (विपरीते) ।  
परिणामे = फल । दुरित-मनि = पापबुद्धि । रोषे = तामस । तनय =  
पुत्र । रहित-मति = बुद्धिहीन । अन्तर्गति = अन्तर्गत, अनुचित ॥  
निगम-अगम = वेद ओ तन्त्रशास्त्र मे । हरि हर-विधि = विष्णु महान  
देव ओ ब्रह्मा । अनुपामे = जकर उपमा नहि हो ॥

(हुनक ध्यान करैत छथि ।)



(ततः प्रविशति भक्तिपरस्मया दुर्गा)

दुर्गा - प्रसन्नाऽस्मि । तत्राभीष्टमर्थयम् ।

अनि० - नागबन्धनान्मुक्तिर्भवतु ।

दुर्गा - एवमस्तु । तेषां विष्णोः समस्तपद्मैः तमबद्धैः नऽपि स्वयां बद्धवद्भुवित-  
व्यम् । (इति निष्क्रान्ताः) ।अनि० - कथञ्च तव जगदम्बा ? (विमृश्य सहर्षं) विण्मटम्मम सर्वबन्धनदुःखं  
भगवत्पाः प्रसादात् । तद्विदानीं मयाऽपि तत्तत्करणकमलस्थायिता  
कुंभपागमनप्रतीक्षमाणेन कुम्भचिह्नितव्यम् (इति निष्क्रान्तः) ।

इति अनिरुद्धबन्धनमोक्षणो नाम चतुर्थोऽङ्कः ॥

## अथ पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति विन्ताकुलः कृष्णः)

कृष्णः - कथमतिरुद्धाश्लेषणाय प्रेषितश्चारिणिरायते ? (पुनस्तस्मात्तो विलम्बय)  
अवमागत एव ।

[तस्मिन् भक्तिं संपराधीन दुर्गा प्रवेशं करोति छविः ।]

दुर्गा - प्रसन्नं छीः तं अभीष्टं वरदानं माङ् ।

अनि० - नागबन्धनं सौ छुटकारा होअय ।

दुर्गा - एहिना हो । तेमो कृष्णक अयबाधरि विगुं बन्धुलो अहो बान्हल जकां  
रही । (बहार भय गेलीहि ।)अनि० - की जगदम्बा दुर्गा चले गेलीहि ? (विचारि सहर्षं) भगवतीक कृपासौ  
हमर सर्वबन्धनक दुःख नष्ट भेल । त एखन हमहूँ हुनक धरणकमलक  
ध्यान करैत कृष्णक आगमनक प्रतीक्षा करैत कतहु रही ।

[बहार भय गेलाह ।]

॥ अनिरुद्धक बन्धन सौ छुटकारा नामक चारिम अङ्क समाप्त ॥

पाँचम अङ्क

[आब चिन्ता सौ व्याकुल कृष्ण प्रवेशं करोति छविः ।]

कृष्ण - अनिरुद्धके तत्काल हेतु प्रेषित दूत कियेक देशी करैत अछि । (फेर  
चारुभर देखि) इहेह त आनिये गेल ।

(ततः प्रविशति चारः)

चारः - जयति जयति देवः ।

कृष्णः - कथं कुम्भारि मिथिनोऽनिरुद्धः ?

चारः -

गीत सावली - ३७

अल अल कानन, जेत हम जानल, ओहल कथ परवेशे  
तेजि सकल भय, परम पसन दय, कतहु न पाओल उदेशे ॥

परिजात तेह हरि लय आनल पै सुराणि कैह रोषे ।

ते जनि कामतनय हरि लय गेल, ई होअ तहाँ विषे ॥

(असवा)

हितक निरखि तनु करव दोसर पुन, सुन्दर तनु निरमाने ।

ई जनि मन करि लय गेल विह हरि ई होअ मन अनुमाने ॥

जै विछु दुसि भेल, से हम कहि देल, अनुप्राप्ति कह अनुमाने ।

नू लक्ष्मीधरमिह बुझाथि रस, हर्षनाथ कवि माने ॥

कृष्ण - मोरो वारीः । न देखला अनुप्राप्तसो भवन्ति । तत्पुनरेव गतिवाऽनिरुद्ध-  
गन्धेय ।

[तत्काल चार प्रवेशं करोति अलि]

चार - कृष्णदेवक जय हो, जय हो ।

कृष्ण - कहह कतहु भेटलभुन अनिरुद्ध ?

चार -

गीत सं० - ३८

अल = पृथ्वी पर । कानन = वन मे । सकल भय = सब कथक डर ।

अनन = यत्न । उदेशे = पता । परिजात = परिजातक फल के इन्द्रक

अन सौ कृष्ण अगने छलाह । सुराणि कैह = इन्द्र के । कामतनय =

कामदेवक पुत्र अनिरुद्ध के । हरि = हरण कय । तनु = देह । विह

हरि = विधाता हरण कय के । अनुप्राप्ति = बार बार चिन्तन ।

कृष्ण - एसा अनुमानह । देखला अनुप्राप्ति नहि होइत छवि । ते फेर जाय  
अनिरुद्धक अश्लेषण परह ।

चर—यज्ञाजिनि देवः । (इति निष्कान्तः ।)

कुण्डः—(सौमिल्य) यत्नेनाऽन्वेष्टिताऽप्यनिरुद्धो न मिलति । अन्तेपुरे च तद्वि-  
प्लेषप्रभवः कोलाहलो न भवति । तस्मिन् विधेयम् ? (विमृष्टा-  
काशे स्मरणे) नारदद्वारा सर्वप्रथमम्, यच्च सर्वानुराग-  
सर्वं जानाति (इति नारदं स्मरति) ।

(ततः प्रविश्याकंशमार्गेण नारदः)

गीत दादरा—३८

मगन-मगन मुनि लिल परवेश ।

भाल तिलक शोष धवलित केश ॥

हाथ कमण्डलु दण्ड विराज ।

आवधि नारद हरिक समाज ॥

चौदह भुवन फिरेनि सब ठाम ।

अनुखन कलह देखन मन काम ॥

दिन मूल बलह करिनि ज तूल ।

कथ चरिनि से लिखि कह मूल ॥

चार—देव जे आज्ञा देखि । (बहार भय गेल ।)

कुण्ड—(विकलतापूर्वक) यत्ने पूर्वक अन्वेष्टण कयलो पर अनिरुद्ध नहि भेटैत  
छथि, ओ इयोड़ी मे हुनक दुख सँ भेल अशांति नहि हटैत छथि । त  
एतय की करी ? विचारि आकाश दिख स्मरण करैत नारदक द्वारा  
सब किछ बुझि सकैत छी । ओ तँ सबठास जाइत छथि ओ सब टा  
अनैत छथि । (नारदक स्मरण करैत छथि) ।

[तखन आकाश वाटें नारद प्रवेश करैत छथि ।]

[गीत सं०—३८]

मगन-मगन=आकाशगामी । भाल तिलक=कपार पर टीका । धव-  
लित केश=बज्जक केश । अनुखन=सतत । कलह=शगडा । विनु-

हर्षनाथ कवि मन दय गाव ।

तूष लक्ष्मीस्वरसिंह बुद्धि भाव ग

कुण्डः—(प्रणमति) ।

नारदः—(शुभाग्रिपन्त्रवा) कथय कथय केन हेतुना स्मृतोऽस्मि ?

कुण्डः—केनापि हृत्तीतिरुद्धो न मिलति । तस्मिन् त्रिभुवनमरता भवता  
कुत्रापि दृष्टः ?

नारदः—बाणपुत्री-त्रिपञ्चकोपया शोणितपुरं चित्रलेखाया नीतः । तत्र च  
बाणामुरेण सह सङ्गरं कृत्वा नागपाशेन बद्धस्तिष्ठति ।

कुण्डः—(गसम्भ्रम) कथयत न गतव्यम् ?

नारदः—बलभद्रप्रथु मनाभ्यां सह गच्छमावह्य सत्वरं गच्छतव्यम् । अहमप्याका-  
शमार्गेण गत्वा सङ्गरमालोकयन् चिरेण चक्षुषीं शीतलपिप्पामि ।

कुण्डः—तथेति (गच्छं स्मरति) ।

(ततः प्रविशति अक्षवातकम्पिताखिलचराचरो गरुडः)

मूल = बिना कारण । तूल = सरिय म । छथि कह मूल = कारण देखि  
के ।

कुण्ड—(अग्रिम करैत छथि) ।

नारद—(शुभाग्रिपन्त्र) कहू कहू कोन हेतुसँ हमर स्मरण कयल अछि ?

कुण्ड—ककरहु द्वारा हरण कयल गेल अनिरुद्ध नहि भेटैत छथि । से कहू,  
त्रिभुवन मे घुमैत अहाँ हुनका कतहु देखलियनि अछि ?

नारद—बाणामुरक पुत्री रूपक पिय करवाक इच्छा सँ चित्रलेखा हुनका  
शोणितपुर लय गेलि । ओतय बाणामुरक संग युद्ध कय नागपाश सँ  
बान्हल छथि ।

कुण्ड—(हड़बड़ावत) आतय कोन जायब ?

नारद—बलभद्र ओ प्रथु मनेक संग गरुड पर चढ़ि शीघ्र जायब छथि । हमहुँ  
आकाशमार्ग सँ जम्ह युद्ध देखैत बहुत दिन पर आनि बुझायब ।

कुण्ड—वेग । (गरुडक स्मरण करैत छथि) ।

[तखन मौखिक हुवा सँ ३८ चर-अक्षर केँ कम्पित करैत गरुड प्रवेश  
करैत छथि ।]



गुरुः—जयति जयति देव । किमर्थं स्मृतीऽस्मि ।

कृष्णः—(सावरं) अन्तरनिष्ठमोक्षाय शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

गुरुः—सदा (स्मृत्युक्तं) वाचयति ;

कृष्णः—कश्चिच्छरेणाऽऽहूतो बलभद्रप्रभुं स्मो नामतो ? (पुनर्निष्ठम्) एतावता गताविष ।

(ततः प्रविशति बलभद्रः प्रभुं स्मरन्)

कृष्णः—(स्मृत्वा संशयनं बलभद्रप्रभुं स्मो प्रति) अनिष्टमोक्षाय सख्यैर-  
स्माभिः शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

बलभद्रप्रभुं स्मो—एवमस्तु ।

(इति निष्क्रान्तः) ।

(ततः प्रविशति वाणाशुरः)

वाणः—कश्चिच्छरेणाहूतो ज्वरो मेदानीमप्यगतः ? (पुनर्निष्ठम्) अगमागत एव ।

गुरुः—देवक जय हो, जय हो । किमेक स्मरणं कयले अछि ?

कृष्णः—सादर भाव ! अनिष्ट के छोड़कर लेल शोणितपुर जयवाक अछि ।

गुरुः—बेस । (उत्कण्ठक आश्रय करैत छथि ।)

कृष्णः—बड़ीकाल बलभद्र ओ प्रभु स्मरि कियेक नहि भयलाह अछि ?  
(कर देखि) दयेह दुहु गोटा बाबिये गेलाह ।

[तथैव बलभद्र ओ प्रभु स्मरि प्रवेश करैत छथि ।]

कृष्णः—(देखि हरबड़भय बलभद्र ओ प्रभु स्मरि प्रति) अनिष्ट के छोड़कर लेल  
हेतु हमराछोरनि सभकेओ शोणितपुर आयव ।

बलभद्र + प्रभु स्मरि—एहिना हो ।

[तथैव वाणाशुर प्रवेश करैत छथि ।]

[तथैव वाणाशुर प्रवेश करैत छथि ।]

वाणः—बड़ीकाल बलभद्र ओ प्रभु स्मरि कियेक आयल ? (कर देखि) दयेह आबिये गेल ।

(ततः प्रविशति ज्वरः)

गीत मालव—३६

अति उममस्त भयङ्कर देश,

सीगराज ज्वर देल परवेश ॥

तीनि चरण, तिनि मुख विकराल

नव लोचन, छओ बाहु विशाल ॥

नयन निमीलित आलस पाए,

हाथ भसम, अनुछन हफिआए ॥

प्रीतिश्रुति भुक्ति कथ पमान,

जाहि परमय ताहि हरए परान ॥

ज्वरः—जयति जयति देव । कश्यप, किमर्थमाहूतोऽस्मि ?

वाणः—बलभद्रप्रभुं स्मरन्तो सह शत्रुघ्नवीरः कृष्णोऽस्मान्निर्मोद्धं समागतः ।

तदस्य भवता सर्वतश्चेताव्युहं विधाय रणभूमी सावधानेन भवितव्यम् ।

ज्वरः—यथाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः) ।

वाणः—(सर्वतो विदीक्ष्य) कथं गत एव सीगराजः । तदस्माभिरपि रथमा-  
स्थाय रणभूमी गन्तव्यम् । (इति निष्क्रान्तः) ।

[तथैव ज्वर प्रवेश करैछ ।]

[गीत सं०—३७]

उममस्त—नशा मे चुर । नव लोचन—नओटा अछि । नयन-निमीलित

= अछि मुत्ते । भसम = छाउर । अनुछन = हरदम । पमान = दावा ।

परमय = लक्ष्य ।

ज्वर—देवक जय हो, जय हो ।

वाणः—बलभद्र ओ प्रभु स्मरि संग वादव-वीर कृष्ण हमरासभक संग लड़वाक  
हेतु भयलाह अछि । ते आइ अहाँ सभदिस सँ सेनाक व्यूह (विन्मास)  
बनाय युद्धक्षेत्र मे सावधानी सँ रहव ।

ज्वर—देवक जे आज्ञा । (बहारा भय गेल ।)

वाणः—(बाह्यर देखि) की चले गेलाह सीगराज ? तँ हमसँसभ रथपर चढ़ि  
रणभूमी जाइ । (बहारा भय गेलाह ।)

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र० - बाणनिग्रहनिमित्तं सिरीकण्ठो आशदो, ता इमं वृत्तं सहीए पित्रअणे निवेदिदुं गच्छेमि [बाणनिग्रहनिमित्तं श्रीकृष्ण आगतस्तद्विदं वृत्तं सख्याः प्रियजनै निवेदिनुं गच्छामि । (इति मननमभिनयति) ।

(ततः प्रविशति अनिरुद्धः)

अनि० - कथमिदं चित्रलेखा ? चित्रलेखे ! कथय शोणितपुरवृत्तान्तम् ।

चित्र० - सिरीकण्ठो आशदो दोसदि [श्रीकृष्ण आगतो दूषते] ।

अनि० - तर्हि निगृहीत एव बाणः ।

चित्र० - सर्व्वं सम्भावीअदि । [सर्व्वं सम्भावयते] ।

(नेपथ्ये गीयते)

गीत अंशौटी सं०---४०

गहड़ चढ़ि बलदेव सांग लय, कागदेवक साथ ओ ।

बन कर गहि धाए पहुँचल, शोणितपुर वदुनाथ ओ ॥

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करत छथि ।]

चित्र०—बाणके दमन करबाक हेतु श्रीकृष्ण अयलाह अछि, से ई समाचार सखीक प्रियलोक के सुनयबाक लेल जाइत छी । (जयवाक अभिनय करत छथि ।)

[तखन अनिरुद्ध प्रवेश करत छथि ।]

अनि०—कौ ई चित्रलेखा चिकीह ? चित्रलेखा ! कहू, शोणितपुरक समाचार ।

चित्र० - श्रीकृष्णके बायल देखेत छथनि ।

अनि० - तखन तँ बाणक दमन भइये गेल ।

चित्र०—सब सम्भव अछि ।

[नेपथ्य मे गाओल जाइत अछि :—]

गीत सं०—४०

कर गहि—हाथमे लय । धाए—दौड़ि । वदुनाथ—कृष्ण । सङ्कर—

भेल सङ्कर अति भयङ्कर, बाण किङ्कर—सङ्ग ओ ।

हनल रिपुदल समर अतिबल कयल ज्वर तनुभङ्ग ओ ।

रोगराज—बिलाप सुनि हरि, कमल तनु जिवदान ओ ।

कहल बहुविधभाग तनु करि, फिरह सकल जहान ओ ॥

कुपित रथ चढ़ि बाण पहुँचल, घोर सङ्कर भेल ओ ।

कृष्ण बाणक बाहु काटल छाड़ि बुझ भुज देल ओ ॥

बाण हरषित भेल पुनु, त्रिपुरारि सँ वर पाए ओ ।

हर्षनाथ विचारि भन, गिरिजाचरण मन लाए ओ ॥

अनि०—(सहर्ष स्वगत) पुनममनसमयितामहविजयो अभिजनं गीयते । (प्रकाशं)

चित्रलेखे ! श्रुतम्भवत्या ?

चित्र०—भद्रं सुखं । [भद्रं श्रुतम् ।]

(पुनर्नेपथ्ये—इत इतो भवन्तः ॥)

चित्र०—कथं नारद—निहिदृढ—मग्गो बलहृद्-पञ्जुन्मेहि सह सिरीकण्ठो इदो ज्येष्ठा अहिचट्टदि, ता अहुरि तस्मा दसणेण अज्ज लोअणाहं सोदलहस्सं । [कथं नारदाहोदमार्गः बलभद्रपञ्जुन्मेहि सह श्रीकृष्ण इत एवाभिवर्त्तते, तदहमपि तस्य दर्शनेनाद्य लोचने शीतलयिष्यामि ।]

युद्ध । किङ्कर-सङ्ग=सेवक सहित । हनल रिपुदल समर=युद्ध मे

राजक सेना के मारलनि । ज्वर तनुभङ्ग=ज्वर के अङ्गभङ्ग । रोग

राज-बिलाप=रोगक राजा ज्वरक कानव । हरि=कृष्ण । बहुविध

भाग तनु=बहुक बहुतो भाग (खण्ड) कय । जहान=संसार । कुपित

=तमसायल । घोर संगर=श्वण्ड युद्ध । त्रिपुरारि सँ=महादेव सँ ।

अनि०—(सहर्ष स्वगत) निश्चित ई हमर पितामहक विजय भाँटसभक द्वारा

गाओल जाइछ । (मुनान) चित्रलेखा ! सुनल अहाँ ?

चित्र०—नीकजकाँ सुनल ।

[फेर नेपथ्य से—“एम्हर बाटे” अपने लोकनि” ।]

चित्र०—कौ नारदक द्वारा रास्ता देखओला पब बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग श्रीकृष्ण एम्हरहि अशेत छथि ? तँ हमहूँ हुनक दर्शन सँ आइ आँखि जुड़ायब ।



अनि०—एवमेवम् ।

(ततः प्रविशति बलभद्रप्रवृत्तयुग्माभ्यां सह गरुडावहः श्रीकृष्णो नारदः  
एवम् ।)

नारदः—एष नागपाशबद्धोऽनिरुद्धस्तिष्ठति । तदेनम्भोचयतु गरुडो नागपाशं  
हातु ।

गरुडः—तथा । (इत्युपसर्पति । नागाः पलायन्ते ।)

अनि०—एषोऽनिरुद्धोऽहं भवतः प्रणमामि ।

बलभद्रः—सम्बन्धः कल्याणमाप्नुहि ।

कृष्णः—क्व पुनरस्माकं स्तुषा बाणपुत्री ? चित्रलेखे ! प्रवेक्ष्य ताम् ।

चित्र०—तथा । [तथा ।] (इति निष्क्रम्य तया सह प्रविशति) ।

चित्र०—एसा अह्माणं पिअसही बाणपुत्री तुम्से पणमइ । [एषाऽस्माकं प्रिय-  
राखी बाणपुत्री युष्मान् प्रणमति ।]

बलभद्रः—सौभाग्यवाती भूयात् ।

अनि०—अवश्य, अवश्य ।

[तत्क्षण बलभद्र औ प्रवृत्तयुग्मक संग गरुड पर चढ़ल श्रीकृष्ण ओ नारद  
प्रवेश करैत छवि ।]

नारदः—इयेह नागपाश मे बाह्यल अनिरुद्ध छवि । से हिनका नागपाश सँ गेरु  
छोड़ावतु ।

गरुडः—वेस । (लग जाइत छवि, नाग सभ भगीत अछि ।)

अनि०—इयेह हम अनिरुद्ध अहाँलोकनिके प्रणाम करैत छी ।

बलभद्रः—सभ दिन कल्याण प्राप्त कर ।

कृष्णः—आ हम रालोकनिक पुतोहु बाणपुत्री कतय छवि ? चित्रलेखा ! हुनका  
प्रवेश कराव ।

चित्र०—वेस । (बहार भय हुनका संग प्रवेश करैत छवि ।)

चित्र०—ई हम रासभक सखी बाणपुत्री सपा अहाँसभ के प्रणाम करैत छवि ।

बलभद्रः—सौभाग्यवाती होयु ।

कृष्णः—देवर्षे नारद ! किमतः परं विधेयम् ?

नारदः—देव ! स्वजनसमाह्वाननाय बाणपुत्र्यनिरुद्धाभ्यां सह अटिति द्वार-  
वती गन्तव्या ।

कृष्णः—एवमस्तु ।

(इति सर्वे गमनमभिनयन्ति)

नारदः—कथं कृतकार्यैर्मुग्धाभिः क्षणमार्गेण द्वारवती प्राप्ता ।

कृष्णः—सर्वाम्भेक्षतः प्रसादात् ।

(ततः प्रविशति पुरस्त्रीभिस्सह हविमणी)

हविमणी—(सहर्षं कृष्णप्रति) अज्ज सम्पणमनोरहा अहं बहुए बाणपुत्रीए  
दंसणेण । अइय सम्पूर्णमनोरथा अहं बहवा बाणपुत्र्या दर्शनेन ।]

कृष्णः—एवमेवं, तदनया सम्पन्ननिरुद्धं नीराजयतु भवती ।

हविमणी—तथा । [तथा ।] (इति नीराजयति ।)

गीत चुमाओन आरती—४१

पुरवञ्जनमन्तप समुचित, आज सुमङ्गल भेल ।

लय नागरि यदु-बालक, हरषित दरजन देल ॥

कृष्ण—देवर्षि नारद ! आब की करक चाही ?

नारद—देव ! अपनालोकक आशवागनक लेल बाणपुत्री ओ अनिरुद्धक संग  
अटंरथ द्वारका चली ।

कृष्ण—एहिना हो ।

[सभ जयवाक अभिनव करैत छवि ।]

नारद—की कार्यसम्पादन कथ अहाँलोकनि छने भरि से द्वारका पहुँचि गेलहुँ ?

कृष्ण—सब अपनेक कृपा सँ ।

[तत्क्षण नगरनारीसभक संग हविमणी प्रवेश करैत छवि ।]

हविमणी—(सहर्षं कृष्णक प्रति) हम बच् बाणपुत्रीक दर्शन सँ पूर्णमनोरथ  
भेलहुँ ।

कृष्ण—ये ठीके । त हिनका संग अनिरुद्धके अहाँ आरती कर ।

हविमणी—वेस । (आरती करैत छवि ।)

[गीत सं०—४१]

पुरवञ्जनमन्तप = पूर्व जन्मक तपस्याक । नागरि = सुन्दरी नायिका

आनन्द भरल नगर भरि, भूषण वसन समारि ।  
यदुपति-भवन गमन करि, कर कीतुक नर नारि ॥  
कनक-कलस पुरहर करि, मणिमय दीप बराए ।  
दूबि अक्षत कर लय कहूँ, चानन भवन निपाए ॥  
नगर नारि यदु-बालक नागरि सहित चुमाव ।  
हर्षनाथ भन मन दय मिथिलापति बुझु भाव ॥

नारदः—(कृष्णप्रति) किन्ते भूयः प्रियमुपकरोमि ।

कृष्णः—अतःपश्मपि प्रियमस्ति ? तथापीदमस्तु—

राजानाः परिपालयन्तु वसुधास्थानेण सर्वे जनाः  
स्वीयच्छुभं समाधरन्तु समये वर्पन्तु धाराधराः ।  
एतद्धूतनिबद्धनाटक रसास्वादानुरक्ताश्चिरं  
भूवासु निवसन्त्यासहृदया भूरस्तु शश्वान्विता ॥१३॥

नारदः—एवमस्तु ।

(उषा) । यदुबालक=अतिदल । वसन=वस्त्र । समारि=सजा  
कय । यदुपति-भवन=कृष्णक घर । कीतुक=उल्लास । कनक-कलस  
=सोनाक धौल । पुरहर=गङ्गल घट ॥

नारदः—(कृष्णक प्रति) अहाँक आओरो अधिक प्रियकाज हम की करी ?

कृष्ण—एहूँ सँ अधिक प्रिय होइछ ? तेयो ई होअओ—

राजालोकनि पृथ्वीक नीकजकाँ रक्षा करथु, सब लोक धर्म सँ  
अवन काज करओ, भेष उचित समय पर वरिसओ, एहि कबालक  
सँ निबद्ध नाटकक रसास्वादन मे अनुरक्त सहृदयलोकनि उपदेश-  
रहित (वाग्मिमय) होथु ओ पृथ्वी धान्य सँ युक्त हो ॥१३॥

नारदः—एहँ हो ।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वारवतीप्रत्यागमनो नाम पञ्चमोऽङ्कः ।

इति श्रीहर्षनाथकविविरचितमुषाहरणनाम  
नाटकम्परिपूर्णम् ॥

[सप्त बहार भव गेल ।]

॥ द्वारका वरव नामक पाँचग अङ्क समाप्त ॥

इति श्रीहर्षनाथ कविक बनाओल उषाहरण नामक  
नाटक पूर्ण गेल ॥

★ ★



## परिशिष्ट

हर्षनाथकविक उज्ज्वल गीत

### १—श्रीवन्दुगकि

जय जय विन्ध्यनिवासिनि ।  
तनुहवि - निन्दित - दामिनि ॥१॥  
आनन शशधर - मण्डल ।  
तीनि वसन अति कुण्डल ॥२॥  
कनक - कुशेशय आसन ।  
वसय निकट पञ्चानन ॥३॥  
राज्य चक्र निरभय वर ।  
कर धर शशधर शैखर ॥४॥  
तुल्य पद पङ्कज मधुकर ।  
हर्षनाथ भक्त कविधर ॥५॥

### २—श्रीताराक

जय जय भयहरणि मञ्जु-  
हासिनि । मधु - दसन - कञ्ज-  
आसन - शिव - सेवित - पद - कमल तारिणी ॥ध्रु०॥  
नवल जलद मञ्जु भास,  
ज्वलित प्रेत भूमिवास  
मुण्डमाल अति विलसत विपद्हारिणी ॥१॥  
तीन नवन अरुन वरन,  
विश्वव्यापि सलिल सदन ।  
ललित अवल कमल - पुमल - चरणधारिणी ॥

लम्ब उदर खर्षा रूप,  
द्वीपि अजिन कटि अनुप ।  
चपल - रसन धिकट दक्षन, दुरितदारिणी ॥२॥  
मुद्रापञ्च लसत माध-  
खड्ग काति दहित हाथ ।  
ब्राम मुण्ड कुबल मीलि, अक्षोभधारिणी ।  
भगंत हर्षनाथ नाम,  
जनक नगर नृपति काम ।  
पुरिअ परम कवणधाम, भक्ततारिणी ॥३॥

२ - श्री कृष्णजन्मोत्सव

(सोहर)

(पद) अचिरल जलधर गरजत, घनरस हरिसत रे ।  
दादुल संकुल रमसत दामिनि जगकत रे ॥ललना॥  
(छन्द) तद्धित जगकत, जलद गरजत, करत दादुल सोर ओ ।  
निमिर सङ्कुल, करत आकुल, निशित भादव घोर ओ ॥१॥  
(पद) अवतत देवकिनन्दन, जन सुख चन्दन रे ।  
गुरनर गुनि कृतवन्दन, कंस-मिकन्दन रे ॥ललना॥  
(छन्द) अवतरल यदुकुल, कमल दिनकर, सकल जन सुखकन्द ओ ।  
नन्द नयन, ज्योतिर सभसद, पुरत शारद चन्द ओ ॥२॥  
(पद) अमल कमल दल गञ्जन, लोचन लज्जन रे ।  
निभूषन आपद भञ्जन, जग अनुरञ्जन रे ॥ललना॥  
(छन्द) जगत रञ्जन, विषयभञ्जन, वदनमञ्जित जान ओ ।  
नवल जलधर, रुचिर तनुवर, विजित मृगमद मान ओ ॥३॥  
(पद) नार-छिनाओन दगारि न कत क्षन पाओल रे ।  
हरपित गोप वधूजन, सोहर गाओल रे ॥ललना॥  
(छन्द) हरषि गाकहि, नगर नागधि, करहि सुरनर जान ओ ।  
मुनत निवकल, रहत लगभृग, छुटत मुनिजन ध्यान ओ ॥४॥

(पद) भनि मानिक मुकता कत, कञ्चन अभरन रे ।  
जत छल नन्द भवन घन, पाओल गुनिजन रे ॥ल०॥  
(छन्द) गुरग गजरथ, कनक मानिक, रतन मुकता साध ओ ।  
पावि नदगट गणक चटपट, भेल सकल सनाथ ओ ॥१॥  
(पद) सुरगण सहित पुरन्दर, करि शुभ डम्बर रे ।  
देखन यदुकुल सुन्दर, आएल डम्बर रे ॥ल०॥  
(छन्द) वरिस सुरगण, कुमुम परसन, मुदित पुलकित अंग ओ ।  
देव-दुग्दुभि, बाजु डम्बर, होत मंगल रङ्ग ओ ॥२॥  
(पद) हर्षनाथ भन मनदस, हरि परसन भव रे ।  
करथ नृपति लक्ष्मोदवर, जन धन उपवस रे ॥ल०॥  
(छन्द) हर्षनाथ सनाथ करि, यदुनाथ त्रिभूवनधाम ओ ।  
पुरथ मिथिला, नगर नायक सकल अभिसर काम ओ ॥३॥

उचिती

मुपुषा हृदय विचारि रे ।  
मुनिअ वधन अवधारि रे ॥१॥  
सनि मोर परम अजान रे ।  
राखव - हिनक अभियान रे ॥२॥  
परम हिनक जैओ दीप रे ।  
करिअ तकर जगु रोष रे ॥३॥  
सहम छास अवराध रे ।  
मुजन नेह नहि बाध रे ॥४॥  
हर्षनाथ कवि भान रे ।  
मिथिलापति रस जान रे ॥५॥  
--(उषाहरण-गीत--२६)

५--नायिका वर्णन

देखल सुहायिन रामा ।  
पुरल लोचनकाया ॥१॥



आनन सारद चन्दा ।  
 लखि मुनिहुक मति मन्दा ॥१॥  
 अनुपम भौह कमने ।  
 लोचन विषमय धाने ॥३॥  
 मधुर सुधारन भासे ।  
 रसमय बचन विलासे ॥४॥  
 कुचपुग पङ्कज कांती ।  
 रोमावलि अलि पांती ॥५॥  
 उर कदलीसम सोहे ।  
 मन्द गमन मन मोहे ॥६॥  
 हर्षनाथ कवि भाने ।  
 मिथिलापति रस जाने ॥७॥

## ६--विरह

अविरल सरस वरिस जलबिन्दु ।  
 जलधर निकर मगन भेल इन्दु ॥ ॥  
 कुन्द कुमुद परिमल लय वीर ।  
 सरस समय बह मलय समीर ॥१॥  
 नाचत सिखिन उपवन जाए ।  
 पहु परदेश मोहि किछु न सोहाए ॥३॥  
 जे निश पहुँसै छन सम भान ।  
 से भेल तनि विनु कल्प समान ॥४॥  
 एहन निहुर पहु आव न नेह ।  
 अनुछन मदन दहन दह देह ॥५॥  
 रसमय हर्षनाथ कवि भान ।  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥६॥  
 ७--प्रथम-समागम

प्रथम समागम जिव मोर काप ।  
 जनि सर मदन बड़ाओल बाप ॥१॥

हम न जाएथ सखि सुपुरुष पास ।  
 सुमरि सुमरि हिय बड़य तरास ॥१॥  
 कमल कली मधुकर अति जोरा ।  
 हरि पुनु केलिक करय निहोरा ॥३॥  
 हर्षनाथ सुपुरुष अनिरोष ।  
 मालति छमिय भमर सब दोष ॥४॥

## ८--विरह

समय वसन्त पिला परदेश ।  
 असह सहज कत विरह कलेश ॥१॥  
 सुमरि सुमरि पहु रहय न धीर ।  
 मदन दहन दह दगध शरीर ॥२॥  
 अलिकुल पुञ्जित कुसुमित कुञ्ज ।  
 लागु नयन जनि पावक - पुञ्ज ॥३॥  
 सीतल पंकज चम्पक - माल ।  
 बूदय दहय जनि विषघरजाल ॥४॥  
 रसमय हर्षनाथ कवि भान ।  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥५॥

## ९--उत्कण्ठा

हम कि कहय सखि तोरा चित बोरा ।  
 आनि मिलाबिअ मोरा ॥१॥  
 पहु विनु चित नहि धीरे, नहि धीरे,  
 देह दह दहित - समीरे ॥२॥  
 कथोन कुमति मोहि भेला, बिह देला,  
 पहु विमनस करि लेला ॥३॥  
 जे धनि कर नुस माने, नहि जाने  
 तयु मत्त मनु कि पपाने ॥४॥

कैरि न करव इह काजें यदुराजें,  
जहाँ पुनि होएत समाजें ॥१॥  
हे सखि ! करहु उपाई, यदुराई,  
एक बेरि पैहु मताई ॥२॥  
हर्षनाथ कवि भाने, परमाने,  
रस भावुक रस जाने ॥३॥

## १०--सौन्दर्य

आज देखल एक कामिनि रे,  
नव कामिनि रेहा ।  
नील वसन लखि अवतर रे,  
जनि जलद सन्देहा ॥  
तड़ित बैकत होअ निअ रुचि रे,  
परगासन कामा ।  
तमु तनु लखि लज्जित होअ रे,  
पुनु पुनु मतधामा ॥  
विशत गिरिश-नयनानन रे,  
जनि लज्जित चाने ।  
तमु मुख लखि नहि बड़ जन रे,  
सहु निअ अरमाने ॥  
अमल कमल दल मञ्जन रे,  
लखि नयन विलासे ॥  
जनि लज्जित भय खञ्जन रे,  
कर बिपिन निवासे ॥  
हर्षनाथ कविशेखर रे,  
रसमय इही गावे ।  
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे,  
मनदय वुझ भावे ॥

## ( ११ )

तड़ित लता सम सुन्दरि सजनी, देखल अति अभिराम ।  
लोचन-जुगल जुड़ाएल सजनी, लखि तमु तनु अनुपाम ॥१॥  
बदन मनोरम राजित सजनी, लोचन - युगल विशेष ।  
जनि सरसीरुह बौसल सजनी, मधुकर - युगल सुवेष ॥२॥  
चललि रोमावलि विषहरि सजनी, लोचन खञ्जन लाभ ।  
लखि नासिक पन्नगरिपु सजनी, कुच गिरितट छपि शोभ ॥३॥  
धरण रबत नव तूपुर सजनी, लागत अति अभिराम ।  
जनि सरसिज-दल रवकर सजनी, मदकल मानस-धाम ॥४॥  
जगत-जननि पद सेवक सजनी, हर्षनाथ कवि गाव ।  
रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी, नृप वृक्ष मन दय भाव ॥५॥

## १२--विरह

आज अपाङ्ग मदन तन बाहु,  
बरिसत मेघ विरह भेल गाड़ ॥  
गरजत घन तन लहरत मोर,  
परदेश धिलमहु नन्दकिशोर ॥१॥  
रहब कोन भोली,  
आलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहती ॥ध्रु०॥  
सावन सखि सब झलत हिलोर,  
केलि करहु सखि पिया रंग मोर ॥  
धनरि भिजल सखि पहिच बनाय,  
विरह अधिक तन सहूलो न जाय ॥३॥  
सोषव दिनराती,  
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥  
भादव के घन गरजत घोर,  
वज्र पर छाव घटा चहुँ ओर ॥  
किङ्कुर निशिदिन बोलत जोर  
घीवन दादुर बोलत मोर ॥३॥



मदन मनोरथ मांती,

अलि हनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥  
आसिन सखि हे आपल करत,

सुख सर से दुख भय गेल अन्त ॥

हर्षनाथ मन मन में आस

श्रीजि लगहु हो प्रीतम वास ॥४॥

जुड़ाएल छाती,

अलि हनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥

१३

सखि ! सखि अनुगत भेल ऋतुराजे ॥ध्रु०॥

पिक कुल कल, अनुरञ्जित नवदल,

कुसुमित जगवन छाजे ॥१॥

अलि कुल कलित, ललित कुसुमाकुल,

विलसित वल्लि अनेके ।

एहन समय पहु, परदेस धिर रह,

कि कह्य तनिक विवेके ॥२॥

नृप-तनयापति, गोपमुता रति,

कय कोन परि यदुवाले ।

पमुपसृत-कृत, रहसि तिमिर नित,

विविध भेल से काले ॥३॥

तेजि गेल यदुपति, कयल उचित अति,

असित हृदय थिक बकि ।

कोकिल निज हित, अनुदिन परिषित,

नवदल तेजयि काके ॥४॥

धीरज धय रह, अचिर मिलत पहु,

होएत विरह - अवसाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझयि रस,

हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१४

सखि सखि कहिअ कओन परकारे ।

पहु परदेश गेल, सरस समय भेल, हनय मदन दुरवारे ॥१॥

चान किरत तन, दहय समीरन, चन्दन चम्पक दामे ।

कि करब के कह, विमुख देखि विह, सकल जगत भेल वामे ॥२॥

नलिन-विजन तन विषम गरल सन, अति दह कोकिल गाने ।

मदन बेदन तन, असह सहब कत, छन छन निकसत प्राने ॥३॥

धीरज धय रह, अचिर मिलत पहु, होयत विरह अवसाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझयि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

१५--अनुराग

कि कहव दुहुक प्रथम अनुरागे ।

प्रथम विलोकन अवधि दुहुक मन कत अनुछन रस जागे ॥१॥

मदन विषम शर, दलित दुहुक तन, दुहु मन वसु एक काजे ।

दुहुक मिलित मन, रहय सतत छन, आंतर भय रह लाजे ॥२॥

विरह दहन कत, विषम पराभव, हृदय धरय जत मोई ।

लज्जरोट चापल मद गजजन, नयन धेकत तन होई ॥३॥

मलय पवन धासि किरन सरोरुह, परस दुहुक तन छोने ।

असह सहजो कत, रहय विकल नित, एकओ न अपन अधोने ॥४॥

प्रथम वचन नहि, कहय एकओ नहि, दुहु मन करि अभिमाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझयि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१६--मान

करिअ न हृदय कठोर ।

अवशुन परिहरि परसनि भय धनि, (माननि) पुरिअ अभिमत मोर ॥१॥

संस वसन्त तिहारि जगत भरि, परिहरि प्रिय जन दोष ।

नागध नागरि रमय रहनि भरि, तेहि धनि तेजह न रोष ॥२॥



एक बेरि वचन अमिअ सम भायिअ, पिक कुल तेजओ मान ।  
सरस विलास हास परगासिअ, अमिअ तेजओ अभिमान ॥३॥  
चाचक जन तहि करय विपुल धनि, मन गुनि बुझिअ सेआनि ।  
मधु तेजि मधुकर, फिरय कंटक डर, केतकि कां धिक हानि ॥४॥  
यामिनि बिति गेल, भोर समय भेल, आब तेजहु धनि मान ।  
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

## १७--सौन्दर्य

माधव<sup>१</sup> देखल अपरूप रूपे ।  
नील वसनि धनि, जलद वलित जनि, धिर रहू तड़ित सरूपे ॥ ॥  
सिन्दुरविन्दु भाल पर तापर, रचित चिकुर परिपूरे ।  
राहुश्चन डर जाए नुकाएल, तिभिद निकर जनि सूरे ॥२॥  
नूपुर पचराग पद शिञ्जित, ललित नटन श्रुति कुञ्जे ।  
नयन भेद कहू, पुलक अंग महू, कनक विशेषक पुञ्जे ॥३॥  
कृष्ण युग कनक कलश सद गञ्जन निरखि उपजु मन शंका ।  
तीति भुवन जनि, जीति मदन जनि, कवल अधोमुख डंका ॥४॥  
तनु तनु रचल मदन जनि रसमय, की रस लम्पट चाने ।  
जप तप निरत सतत रस वञ्चित, की बिहू रचत अजाने ॥५॥  
नव-पल्लव गञ्जान मनरञ्जन, अधर धिम्ब निरमाने ।  
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥६॥

## १८ - नायिकाक अनुनय

किअ औसलि मुख केरि ॥ध्रु०॥  
मुख ही चीर दूर करि सुन्दरि, हरलि हेर एक बेरि ॥ ॥  
आनन मलिन निहारि तोहर धनि, धूमय फिरय सब ठाम ।  
मुअ मुख चान चकोर मोर मन, कतहु न कर बिसराम ॥२॥

चान किरन चम्पक दल चन्दन, कोकिल पञ्चमगान ।  
तुअ बिगलित मन, हेरपित अनुछन, लगइछ अनल समान ॥३॥  
मोर अपराध परल जेओ सुन्दरि, किअ परितेजहु हार ।  
आनक दोष आन परि तेजहु, के कहू एहन विचार ॥४॥  
यामिनि बिति गेल, भोर समय भेल, अबहु तेजु धनि मान ।  
नृप लक्ष्मीश्वर सिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

## १९--नायिका-वर्णन

जाइत<sup>१</sup> देखल नव नामरि रे, नवकञ्चन रेहा ।  
विभुवन विजय मनोरथ रे, जनि रचल बिदेहा ॥ ॥  
लसत कुटिल कंच लोचन रे, के कहू उपमाने ।  
मोन धुगल बनसी लय रे, वेधल पचवाने ॥२॥  
ललित कोर मुख पंकज रे, छवि देत विशेषा ।  
जनि पुरन शारद शशि रे, यामिनि परिवेशा ॥३॥  
मुवजन मानस हाटक रे, अनुछन कर चोरी ।  
ते जनि कृष्ण-युग बान्हल रे, दुइ कंचक डोरी ॥४॥  
हर्षनाथ मनदय कहू रे, नामरि अनुषामा ।  
पुरुष जनम तप देखल रे, लोचन अभिरामा ॥५॥

१-द्रष्टव्य-‘उपाहरण’-गीत सं०-२७ ।

